खण्ड-437, अंक-2
बुधवार, 30 फाल्गुन, शक संवत् 1922
(21 मार्च, 2001 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(तेरहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 2001)

खण्ड 437 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)

2001

मूल्य : बिना महसूल रु0 16.75 पैसे, महसूल सहित रु0 21.00 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल रु0 586.25 पैसे, महसूल सहित रु0 724.25 पैसे |

विषय सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	क
वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री बनारसीदास चांदना, श्री निर्भय पाल शर्मा, श्री महराज सिंह यादव तथा श्री विशम्भर सिंह के निधन पर शोकोद्‌गार ...	1-13
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य, श्री शिव नरेश, श्री राम स्वरूप भारतीय, श्री जगदीश नारायण रस्तोगी, श्री मनहरन नाथ कौल, श्री महेश कुमार, श्री राम प्रसाद देशमुख, श्री रघुराज, श्री मुन्नू लाल, श्री ध्रुव नारायण सिंह, श्री ओंकार सिंह, श्री शिवदास, श्री शिव प्रताप सिंह, श्री रूप नाथ सिंह यादव तथा डा० ब्रजभूषण मणि त्रिपाठी के निधन पर शोकोद्‌गार	14-23
गुजरात में आये विनाशकारी भूकम्प से हुई जन-धन की अपार हानि के प्रति प्रस्तुत संवेदना प्रस्ताव (स्वीकृत)	23-24

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(तेरहवीं विधान सभा)

बुधवार 21 मार्च, 2001

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :–

1–अजय प्रताप सिंह उर्फ लल्ला भइया, श्री	गोण्डा
2–अतीक अहमद, श्री	इलाहाबाद
3–अनिल कुमार यादव	मैनपुरी
4–अब्दुल कलाम, श्री	बस्ती
5–अब्दुल कलाम, श्री	वाराणसी
6–अब्दुल खालिक, श्री	अलीगढ़
7–अम्मार रिजवी, डा०	सीतापुर
8–अशफाक अहमद, श्री	बरेली
9–आनन्द प्रकाश, श्री	पडरौना
10–उर्मिला देवी, श्रीमती	मैनपुरी
11–कल्याण सिंह, श्री	अलीगढ़
12–गणेश राजभर, श्री	गाजीपुर
13–चन्द्र पाल सिंह यादव, श्री	झांसी
14–चौधरी बाबूलाल, श्री	आगरा
15–जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भइय्या, श्री	गोरखपुर
16–दद्दू प्रसाद, श्री	बांदा
17–धनराज यादव, श्री	सिद्धार्थनगर
18–नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री	हरदोई
19–पूरन सिंह बुन्देला, श्री	ललितपुर
20–प्रेम प्रकाश सिंह, श्री	देवरिया
21–बंश नारायण सिंह, श्री	भदोही
22–बच्चा पांठक, श्री	बलिया
23–बादशाह सिंह, श्री	हमीरपुर
24–बालेश्वर त्यागी, श्री	गाजियाबाद
25–ब्रजेन्द्र पाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
26–मंगल सिंह सैनी, श्री	मुरादाबाद
27–महेन्द्र अरिदमन सिंह, राजा	आगरा
28–मारकण्डेय चन्द, श्री	गोरखपुर
29–रतनजीत प्रताप नारायण सिंह, कुंवर	पडरौना
30–रवीन्द्र प्रताप चौधरी, श्री	सिद्धार्थनगर
31–राजा गज़नफर अली खां, श्री	बिजनौर
32–राजेन्द्र सिंह पटेल, श्री	फतेहपुर
33–राजेश अग्रवाल, श्री	बरेली
34–राम अवतार मिश्रा, श्री	शाहजहांपुर
35–राम आसरे पासवान, श्री	बस्ती
36–राम आसरे सिंह कुशवाहा,डा०	कानपुर नगर
37–राम कृपाल, श्री	इलाहाबाद
38–राम नक्षत्र, श्री	पडरौना
39–राम नरेश यादव, श्री	आजमगढ़
40–रामपाल राजवंशी, श्री	सीतापुर
41–रामेश्वर सिंह यादव, श्री	एटा
42–लालजी टण्डन, श्री	लखनऊ
43–विनय कुमार पाण्डेय "बिन्नू", श्री	गोण्डा
44–विनोद कुमार सिंह उर्फ पंडित सिंह, श्री	गोण्डा
45–विरेन्द्र सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
46–विरेन्द्र सिंह, श्री	वाराणसी
47–विवेक कुमार सिंह, श्री	बांदा
48–वीरेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री	एटा
49–वेद प्रकाश, श्री	बस्ती
50–संजय सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
51–सतीश महाना, श्री	कानपुर नगर
52–सरस्वती प्रताप सिंह, श्री	खीरी
53–सुखपाल पाण्डेय, श्री	बस्ती
54–सुधाकर सिंह, श्री	मऊ
55–सुशीला अग्रवाल, श्रीमती	मुजफ्फरनगर
56–हरि प्रसाद उर्फ घमड़ी, श्री	सोनभद्र

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में दिन के 11.00 बजे अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।)

वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री बनारसी दास चांदना, श्री निर्भयपाल शर्मा, श्री महाराज सिंह यादव तथा श्री विशम्भर सिंह के निधन पर शोकोद्गार

* मुख्य मंत्री (श्री राजनाथ सिंह)–

माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के विगत सत्र से वर्तमान सत्र के मध्य कुछ महीने व्यतीत हुए हैं । इस काल प्रवाह में व्यतीत हुए कुछ महीनों के साथ हमारे कुछ साथी भी अतीत की स्मृति में समाहित हो गये । यद्यपि यह सृजन, विध्वंस, लय-प्रलय प्रकृति का शाश्वत् नियम है और इसे कोई मिटा नहीं सकता है । इन परिवर्तन के क्षणों में चाहे कोई व्यक्ति हो, चाहे कोई समाज हो वह मूक दृष्टा के रूप में ही अपनी भूमिका का निर्वाह करता है । श्रीमन्, आज मैं इस सदन में वर्तमान विधान सभा के चार सदस्यों के निधन की दुःखद सूचना देने के लिये खड़ा हुआ हूं । श्री बनारसी दास चांदना मेरठ से निर्वाचित थे, उनका निधन 30-10-2000 को हुआ । श्री निर्भय पाल शर्मा जी का निधन 6-11-2000 को हुआ वे सहारनपुर से निर्वाचित थे । श्री महाराज सिंह यादव इटावा जनपद से थे उनका निधन 24-11-2000 को हो गया । श्री विशम्भर सिंह, हाथरस से सदस्य थे उनका निधन 21-1-2001 को हो गया ।

श्री बनारसी दास चांदना एक लोकप्रिय नेता थे वे जुझारु और कर्मठ थे । इनका निधन 30 अक्टूबर, 2000 को हो गया । वे लगभग 72 वर्ष के थे । इनका जन्म 5 जुलाई, 1928 को ग्राम तलहैटा, जिला गाजियाबाद में हुआ था । इन्होंने हाई स्कूल तथा बी०टी०सी० की शिक्षा ग्रहण की थी । सर्वप्रथम 1977 में विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे और उस विधान सभा के चुनाव में मुझे भी सदस्य रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । चांदना जी से हमारा व्यक्तिगत रूप से परिचय था । 1996 के मध्यावधि चुनाव में वे सिवालखास, जिला मेरठ से किसान कामगार पार्टी से विधान सभा के पुनः सदस्य हुए । चौधरी चरण सिंह जी के विचारों से पूरी तरह से प्रभावित थे और सदैव उनके विचारों का अनुसरण करते रहे । वे कई संस्थानों के प्रबन्धक भी थे । शिक्षा जगत से उन्हें बेहद लगाव था । लगभग 35 संस्थाओं से वे अपना संबंधित थे । राजनैतिक गतिविधियों के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों में भी वे बराबर सहभागिता बनाये रखते थे । उनके निधन से मेरठ जनपद ने ही नहीं अपितु पश्चिमी उत्तर प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ और समाज सेवी कार्यकर्ता खो दिया है । जन सामान्य में उनके प्रति एक बेहद सम्मान थे । मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि श्री बनारसी दास चांदना जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके शोक संतृप्त परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की परम शक्ति प्रदान करे ।

श्रीमन्, श्री निर्भय पाल जी शर्मा इस विधान सभा के सम्मानित सदस्य थे । 6 नवम्बर, 2000 को उनकी निर्मम हत्या कर दी गई । उनकी आयु लगभग 53 वर्ष की थी । सर्वप्रथम 1985 में वे कांग्रेस (आई०) के टिकट पर इस विधान सभा में सदस्य के रूप में पहुंचे थे तत्पश्चात् 1996 में मध्यावधि चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के सदस्य के रूप में चुनाव लड़े और विजय प्राप्त की ।

निर्भय पाल जी शर्मा के बारे में, मैं समझता हूं कि सदन के सभी सम्मानित सदस्य परिचित होंगे, वह कुशल व्यक्ति थे । सहारनपुर जनपद में ही नहीं आसपास के कई जनपदों में उनकी व्यवहार कुशलता, साथ ही साथ उनकी प्रतिभा की चर्चा लोग किया करते थे । उनकी निर्मम हत्या हुई और उनकी हत्या से चाहे पक्ष के लोग हों या प्रतिपक्ष के लोग रहे हैं, चाहे किसी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

रहे हों, सबको दुख हुआ, दुख ही नहीं सदमा भी पहुंचा है। उनकी लोकप्रियता का अनुमान तो सचमुच मुझे उस समय मिला जब उनकी निर्मम हत्या हुई और उसकी सूचना प्राप्त होते ही मैं सहारनपुर पहुंचा। अपार जनसमूह उनके आवास के समक्ष उपस्थित था, हत्या हुई थी इसलिए जन आक्रोश स्वभाविक था, मैं उस भीड़ में उतरकर उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करने पहुंचा। उस समय जनता के बीच में इतना आक्रोश था कि मेरे सुरक्षा कर्मी कह रहे थे कि इस भीड़ में आपको नहीं उतरना चाहिए था लेकिन मैं भी अपने को सामान्य व्यक्ति मानता हूं। अपने बीच के एक मित्र की निर्मम हत्या हुई, मैं उनके पास पहुंचा उस भीड़ में हजारों की संख्या में ऐसे लोग थे जिनकी आंखों से आंसू निकल रहे थे। बार-बार उनके अमर रहने के नारे भीड़ द्वारा लगाए जा रहे थे। निर्भय पाल सिंह जी की हत्या से अपूर्णीय क्षति राजनीतिक क्षेत्र में हुई है हम सब इस मामले में सौभाग्यशाली हैं कि सरसावां विधान सभा क्षेत्र ने उनके पुत्र राघव पाल शर्मा को अपने प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित करके सदन में भेजा है। वह इस सदन में, मैं समझता हूं युवा सदस्य हैं। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि श्री निर्भय पाल शर्मा जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके शोक संतप्त परिवार को इस अपार दुख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

श्री महाराज सिंह यादव इस सम्मानित सदन के सदस्य थे उनकी आयु लगभग 55 वर्ष की थी। इटावा जनपद और इटावा जनपद ही नहीं मैनपुरी आगरा, कानपुर में भी उनके संबंध में अच्छी धारणा थी। लोगों का मानना था कि महाराज सिंह यादव किसी के दुख, संकट की घड़ी में जितनी जल्दी हो सकता था स्वयं उपस्थित होते थे। वह लोगों के दुख में हिस्सा बांटने में पीछे नहीं रहे। सर्वप्रथम 1985 में वह भरथना के जिला इटावा क्षेत्र से लोकदल के टिकट पर इस विधान सभा के सदस्य बने थे। तत्पश्चात् वर्ष 1989 में उसके बाद 1991 में और उसके बाद 1993 में फिर 1996 में समाजवादी पार्टी से पांचवीं बार इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। महाराज सिंह यादव जुझारु और जनप्रिय नेता थे। वहीं कई आन्दोलनों में भाग लेते हुए वह जेल गए।

वे वर्ष 78-79 में मण्डी समिति अछल्दा के अध्यक्ष, 1980-89 में जिला लोकदल, इटावा के अध्यक्ष, 1989-91 तक जिला जनता दल के अध्यक्ष तथा लखनऊ विश्वविद्यालय के महमूदाबाद छात्रावास और विधि संकाय के उपाध्यक्ष भी रहे थे। कृषि में भी उनकी विशेष रुचि थी। किसान नेता के रूप में उनकी मान्यता थी। उनका निधन का समाचार प्राप्त होने के बाद कुछ दिन बाद उनके परिवार के प्रति शोक-संवेदना की अभिव्यक्ति करने के लिए स्वयं पहुंचा। उनके दरवाजे पर आपार जन समूह एकत्रित था। वहां से लौटने के बाद, उनके निधन के इतने दिनों के बाद इतनी बड़ी संख्या में लोग मौजूद हैं क्या वह इतने लोकप्रिय थे, यह जिज्ञासा थी, वैसे तो वे मेरे परिचित थे, लेकिन भरथना में जाने का मुझे पहला अवसर मिला था, वहां लोगों ने बतलाया कि जब से इनका निधन हुआ है यहां पर बराबर भीड़ बनी रहती है और लोगों का आना-जाना ऐसे ही चलता रहता है। जिन लोगों से मेरी बात हुई सबने उनकी कर्मठता, जुझारूपन और जन सेवा के समर्पित व्यक्तित्व की सराहना की। यह विधि की विडम्बना ही है कि हमने उनका साथ खोया है। वे जहां पर एक राजनीतिक हस्ती थे वहीं समाज सेवा की जानी मानी हस्ती थे। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा उनके शोक संतप्त परिवार को इस महान कष्ट को सहने की क्षमता प्रदान करे।

श्री विशम्भर सिंह जी भी इसी विधान सभा के सदस्य थे। दूसरी बार वह इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होकर आये। उनकी आयु 49 वर्ष की थी। कोई बड़ी आयु उनकी नहीं थी। वे ग्राम गोबिन्दपुर में 1952 में पैदा हुए थे। वे वर्ष 1993 में क्षेत्र सादाबाद जो कि इस समय हाथरस में है, वहां से चुनकर आये थे। तत्पश्चात् 1996 के उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी के टिकट से चुनकर आये थे। श्री सिंह एक कर्मठ एवं योग्य व्यक्ति थे। वे क्षेत्र के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते थे। उन्होंने ग्राम सभा कजौली के ग्राम प्रधान के रूप में अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू की थी। वह क्षेत्र के

प्रमुख भी रहे आजकल उसे ब्लाक प्रमुख कहा जाता है । वे इस तरह से धीरे-धीरे चलते हुए यहां तक पहुंचे । कृषि कार्य में आपकी रुचि थी और किसान के नेता के रूप में उनकी मान्यता थी । उनके निधन से सचमुच हम सबने एक कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया है और उनके निधन से हम सबको गहरा सदमा पहुंचा है और इस सदन के सम्मानित सदस्यों को अपार कष्ट हुआ है । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त् परिवार को इस महान दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे । मैं आपसे यह भी अनुरोध करूंगा कि मेरी ओर से, हमारे दल की ओर से एवं सदन की ओर से शोक-संवेदनाएं उनके दुखी परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

* नेता विरोधी दल (श्री धनीराम वर्मा)–

श्रीमान्, दिवंगत आत्मा के प्रति नेता सदन के उद्गारों से अपने को सम्बद्ध करते हुए कहना चाहता हूं कि यूं तो संसार में प्रतिदिन अनेक लोग पैदा होते हैं और इस संसार से विदा होते हैं, लेकिन जिनका जीवन केवल अपने लिये नहीं, समाज देश के लिए हुआ करता है, उनका इतिहास बनता है । और आगे आने वाली पीढ़ियां उनसे सबक लेती हैं और शिक्षा लेती हैं और उनका नाम हमेशा-हमेशा के लिए अमर होता है । जो लोग स्वयं अपने लिये अपनी बुद्धि का प्रयोग, धन का प्रयोग किया करते है, उनका नाम लेने वाला कोई नहीं हुआ करता है और यह भी सत्य है हर व्यक्ति में अलग प्रतिभा होती है और उसकी लियाकत उसका व्यवहार और उसका काम अलग हुआ करता है और अपने कार्य और व्यवहार से लोगों के दिलों को छू लेता है और उनके दिलों में अपना स्थान बना कर चला जाता है । ऐसे ही मेरे चार वर्तमान साथी जो पिछली अक्टूबर तक जब पिछला सदन था, वे मेरे साथ बैठ करके प्रदेश की तमाम विकट समस्याओं के सम्बन्ध में अपने विचार रखते रहे हैं और उनके समाधान के लिये प्रयास किया है । इन लोगों ने समाज के लिये अपनी सेवायें दी और देश-प्रदेश को आगे बढ़ाने का काम किया । लेकिन, आज वह हमारे बीच में नहीं हैं ।

इन लोगों में से कुछ सहकारिता के क्षेत्र में, कुछ शिक्षा क्षेत्र में और कुछ अन्य क्षेत्रों में विशेष रुचि रखते थे । हमारे बीच से 70 वर्ष की आयु में श्री बनारसी दास चांदना जी हम से विदा हो गये वह इस माननीय सदन के दो बार सदस्य रहे हैं । वह मेरठ निवासी थे और आपातकाल में उन्होंने 6 मास का कारावास भी भोगा है । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से और सम्पूर्ण सदन की ओर से ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शाश्वत शांति एवं उनके परिवारजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें । साथ ही साथ हमारे बीच से जो 53 वर्षीय श्री निर्भय पाल शर्मा जी अचानक विदा हो गये और स्वयं नहीं बल्कि क्रूर हाथों से जिनकी हत्या हुई और मजबूरी में वह हमसे विदा हुए और उनके परिवारजनों को जो शोक हुआ वह अपने में अभूतपूर्व और कारुण भी उसका रहा और सुरक्षा की गुहार करने के पश्चात् भी उन्हें सुरक्षा नहीं मिल सकी ।

मैं परम् पिता परमात्मा से यह प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को उनके विलग होने के दुख को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करे और उनकी दिवंगत आत्मा को ईश्वर आश्वत शांति प्रदान करे ।

श्रीमन्, तीसरे हमारे साथी थे महाराज सिंह यादव जी वे इटावा के थे, औरैया इटावा से अलग हो गया है, मेरे पास का क्षेत्र से भरथना से पांच बार एम०एल०ए० हुए । जब शुरूआत में लोकदल पार्टी गठित हुई और 1980 से 1989 तक पार्टी का काम उन्होंने बड़ी मजबूती के साथ किया, उन्होंने पार्टी को आगे बढ़ाने का काम किया और इसी वजह से वह 1985 से लेकर 1996 तक पांच बार इस माननीय सदन के सदस्य रहे । उनका इतना सौम्य स्वभाव था कि हर आदमी उनसे किसी समय भी

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मिलने में जरा भी संकोच नहीं करता था वे नहा रहे होते थे और कोई मिलने जाता था तो वह नहाना छोड़कर उनसे मिलते थे । यह उनमें विशेष बात थी । कहीं कोई गमी हो, शादी ब्याह हो वह जरूर जाया करते थे यह उनमें विशेष गुण था । कितनी भी विकट स्थिति परिस्थिति हो लेकिन कभी भी दिलोदिमाग में उनके जरा भी शिकन नहीं आती थी और वह हमेशा प्रसन्नचित्त रहा करते थे, यह उनकी विशेषता थी । सदन में भी जब वह रहते थे अगर कोई बात कहते थे तो बड़ी दृढ़ता के साथ और बड़ी सादगी के साथ साफ और स्पष्ट कहा करते थे उसमें कोई जरा भी मिलावट की बात नहीं हुआ करती थी यह उनमें विशेष गुण था । वह इसी लखनऊ विश्वविद्यालय में महमूदाबाद छात्रावास और विधि संकाय के उपाध्यक्ष भी रहे । उन्होंने 2-3 शिक्षण संस्थाएं भी संचालित की, उनके सदस्य रहे, मंडी समिति के भी अध्यक्ष रहे । इस तरह से उन्होंने विभिन्न प्रकार से समाज सेवा की और उनकी समाजसेवा की छाप जनपद इटावा में ही नहीं पास पड़ोस के जनपदों में अब भी है और मैं विश्वास यह करता हूं कि बहुत समय तक उनके नाम लेने वाले बने रहेंगे ।

अगले हमारे माननीय सदस्य (श्री विशम्भर सिंह जी) जो हमारे बीच में नहीं हैं वह भी अल्पआयु में हमसे विदा हो गये । वे 49 वर्ष के थे वे जनता के दुखदर्द में हमेशा शरीक हुआ करते थे । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करे और उनके परिवारजनों को शोक सहन करने की क्षमता प्रदान करे । मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी ओर से, हमारे दल की ओर से और सम्पूर्ण सदन की ओर से उनके परिवारजनों तक हमारी शोक-संवेदनाएं भेजने की कृपा करें ।

* श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे इस सदन के माननीय 4 वर्तमान सदस्य आज हमारे बीच में नहीं हैं । उसमें प्रमुख रूप से श्री बनारसी दास चांदना जी जो इस सदन के दो बार सदस्य रहे हैं अभी 30 अक्टूबर, 2000 को उनका निधन हुआ, जिला मेरठ में उनका निधन हुआ । वे एक बहुत ही अच्छे समाजसेवी और कई संस्थाओं से जुड़े हुए कुशल राजनीतिज्ञ और समाजसेवी थे । इससे गाजियाबाद जनपद का ही नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश की राजनीति से एक अच्छा प्रतिभाशाली व्यक्तित्व हमारे बीच में नहीं रहा है । हम सभी इस शोक की बेला में अपनी ओर से और बहुजन समाज पार्टी की ओर से उन्हें शोक-संवेदना व्यक्त करते हैं तथा मान्यवर, आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी इन भावनाओं को श्री बनारसी दास चांदना जी के शोक-संतप्त परिवार तक हमारी शोक-संवेदनाएं भेजने का कष्ट करें ।

इसी तरीके से श्री निर्भयपाल शर्मा जी जो सहारनपुर सरसावा विधान सभा क्षेत्र से चुनकर आये थे, वर्तमान में सदस्य थे और उसके पहले भी दो बार इस माननीय सदन के माननीय सदस्य रह चुके थे, बहुत ही कम अवस्था में वह एक हादसे के शिकार हुए और हमारे उत्तर प्रदेश की जो लचर कानून-व्यवस्था रही वह उसके शिकार हुए । अराजक तत्वों ने, गुण्डों ने दिनदहाड़े उन पर गोलियां बरसाई और वह मौत के शिकार हो गये । ऐसी दुखद मृत्यु से हम सभी आहत हैं और उनकी इस मौत से हम सभी को एक भारी सदमा पहुंचा है । हम अपनी और से, अपने दल बहुजन समाज पार्टी की ओर से श्री शर्मा जी के इस निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हैं और माननीय अध्यक्ष जी आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी इस शोक संवेदना को, भावना को भी शर्मा जी के शोक संतप्त परिवार तक पहुचाने का कष्ट करें ।

माननीय अध्यक्ष जी, इसी कड़ी में हमारे सदन के वर्तमान सदस्य श्री महाराज सिंह यादव जी, जो इटावा जिले के भरथना विधान सभा क्षेत्र से चुनकर आये थे, इससे पहले भी वह चार बार इस माननीय

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

सदन के सदस्य रह चुके थे। लगातार 5 बार जीतकर इस सदन में आकर, उन्होंने अपने अच्छे, कुशल सामाजिक और राजनैतिक व्यक्तित्व का जहां एक ओर परिचय दिया था, वहीं दूसरी ओर क्षेत्र की जनता के प्रति उनका लगाव भी परिलक्षित होता है। मूलरूप से श्री यादव जी चौधरी चरण सिंह के किसान आन्दोलन की उपज थे। लोकदल से उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की थी और लगातार किसानों के हित में वह निरन्तर लड़ाई लड़ते रहे। विशेष रूप से गरीबों और किसानों के प्रति वह सदैव सेवा में तत्पर रहते थे, जिसको यहां पर हम सभी लोग अहसास तो करते थे, लेकिन उनके क्षेत्र भरथना में जाने पर उनके व्यक्तित्व के बारे में भलीभांति मुंहजबानी भी सुनी। ऐसे कर्मठ साथी का निधन हम लोगों के लिये बहुत ही अपूर्णनीय क्षति है। हम अपनी ओर से, अपनी पार्टी बहुजन समाज पार्टी की ओर से श्री यादव जी के निधन पर, शोक संवेदना व्यक्त करते हैं, एवं आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी इस भावना को उनसे शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, श्री विशम्भर सिंह जी जो हमारे इस माननीय सदन के वर्तमान सदस्य रहे, 21 जनवरी, 2001 को हृदयगति रुक जाने से उनका निधन हुआ। वह इसके पहले भी इस माननीय सदन के सदस्य रहे। गांव की निचली सीढ़ी से उन्होंने राजनीति की शुरुआत की। वह ग्राम प्रधान भी रहे, ब्लाक प्रमुख भी रहे और इस सदन के दो-दो बार सदस्य भी रहे। इससे जाहिर होता है कि श्री विश्म्भर सिंह जी गांव के खेत-खलिहान से भी जुड़े रहे, गांव के गरीबों से जुड़े रहे। ऐसे कर्मठ साथी के निधन से हमें और हमारे सदन को अपूर्णीय क्षति हुई है। हम अपनी ओर से एवं बहुजन समाज पार्टी की ओर से श्री विशम्भर सिंह जी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हैं एवं आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी इस शोक संवेदना की, हमारी इस भावना को, संदेश को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुचाने का कष्ट करें।

कृषि मंत्री (श्री दिवाकर विक्रम सिंह)–

मान्यवर, आज हम विधान सभा में अपने वर्तमान 4 सदस्यों के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त कर रहे हैं। मान्यवर, श्री बनारसी दास चांदना जी सर्वप्रथम 77 में इस विधान सभा में सदस्य के रूप में निर्वाचित होकर आए थे। यद्यपि उसके बाद उन्होंने इस विधान सभा में 96 में पदार्पण किया लेकिन निरन्तर हम लोग एक दल से जुड़े रहे और चांदना जी हमारे अभिन्न मित्रों में से थे, वे आज हमारे बीच नहीं हैं। मान्यवर, उनकी आत्मा को भगवान शान्ति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को यह दुख सहन करने की क्षमता दे। मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरे और मेरे दल की ओर से यह शोक संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्रीमन्, श्री निर्भय पाल शर्मा जी इस सदन में वर्ष 1993 में चुनकर आए थे। वे 85 में प्रथम बार आए उसके बाद 93 में और फिर 96 में निर्वाचित होकर आए। उनके साथ भी इस सदन में बैठने का अवसर प्राप्त हुआ है। वर्ष 1985 के निर्वाचन के पश्चात् हम लोगों को अगल-बगल ही आवास आवंटित हुए थे। एक अच्छे नेता, एक अच्छे समाजसेवी को हमने खो दिया है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को यह महान दुख सहन करने की क्षमता प्रदान करे। मान्यवर, आपसे निवेदन है कि मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से यह शोक संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्रीमन्, श्री महाराज सिंह यादव जी इस सदन में 1985 में आए और निरन्तर इस सदन के सदस्य रहे, तब से अब तक। मान्यवर, स्वर्गीय श्री महाराज सिंह जी भी स्वर्गीय श्री चौधरी चरण सिंह जी के स्कूल के छात्र थे। चौधरी चरण सिंह जी के निर्देशन में हम लोग एक साथ किसान राजनीति में निरन्तर लगे रहते थे। मान्यवर, उनको खो करके इटावा ही नहीं, औरैया ही नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश की किसान राजनीति को धक्का लगा है। मान्यवर, एक न्याय प्रिय नेता इस सदन से चला गया। श्रीमन्, मेरा

आपसे निवेदन है कि मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से शोक-संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें और हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे ।

श्रीमन्, चौधरी विशम्भर जी हमारे बीच में वर्ष 1993 में आए थे और वह पुनः 96 में इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे । हम अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे । श्रीमन्, मेरी आपसे प्रार्थना है कि यह शोक-संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

* श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, अध्यक्ष जी, मुझे स्मरण नहीं है कि इतने कम समय के अन्तराल में, एक सत्र और दूसरे सत्र के बीच हमने अपने 4 साथियों को खो दिया हो । यह दुखद क्षण विधान सभा के इतिहास में पहली बार आया है कि हम अपने 4 साथियों जो इसी वर्तमान सदन के सदस्य थे, उनके प्रति शोक संवेदना के शब्द कहने के लिये खड़े हुये हैं । मान्यवर, मृत्यु जीवन का अकाट्य सत्य है और यह काल चक्र अनवरत रूप से चलता रहता है और यहीं आकर ज्ञान-विज्ञान, जय पराजय, सब कुछ रुक जाता है और मृत्यु एक सच्चाई के रूप में उभर कर आती है । इसी काल चक्र के चलते आज अपने 4 साथियों जिनको स्वर्गीय कहते हुये दुख होता है, हम उनके प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे हैं । श्री बनारसी दास चांदना, श्री निर्भय पाल शर्मा, श्री महाराज सिंह यादव, श्री विशम्भर सिंह हमारे बीच में नहीं रहे । श्री बनारसी दास चांदना जब तक यहां रहे अपने क्षेत्र की आवाज को पूरी शक्ति के साथ उठाते रहे । काफी दिनों से वह बीमार थे । लेकिन मुझे विश्वास नहीं था कि वह इतनी जल्दी हमारे बीच से चले जायेंगे ।

मान्यवर, निर्भय पाल शर्मा जी के निधन का समाचार जिन परिस्थितियों में और जिन स्थितियों में मिला, मैं स्तब्ध रह गया । निर्भय पाल जी मेरे व्यक्तिगत मित्र थे । 1985 में जब वह पहली बार निर्वाचित होकर आये तब से लेकर आज तक अनवरत रूप से मेरी उनकी मित्रता कायम रही । निर्भय पाल जी के लिये एक बात मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूं कि उनको मित्र बनाना भी आता था और मित्रता निभानी भी आती थी । उनका हृदय अत्यन्त निर्मल था और वह अत्यन्त विनम्र होते हुये भी बहुत ही विश्वासपूर्वक अपनी बात को कहते थे । जब कुछ करने की ठान लेते थे तो उसकी चरम परिणति तक पहुंचना उनके जीवन का अकाट्य लक्ष्य था । मैं माननीय मुख्य मंत्री जी के शब्दों से अपने को संबद्ध करते हुये कहना चाहता हूं कि जिन विषम परिस्थितियों में उनकी हत्या की गयी वह कहीं न कहीं हमारी कानून व्यवस्था और सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्न वाचक चिन्ह लगाता है । मैं ईश्वर से इतनी प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे और माननीय मुख्य मंत्री जी से आग्रह के साथ, विनम्रता के साथ यह कहना चाहता हूं कि उनके परिवार की सुरक्षा के लिये हर वह प्रबन्ध किये जायं जिससे उनके परिवार की सुरक्षा हो । इसी के साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि उनकी हत्या में जो लोग दोषी हैं उनको किसी कीमत पर बख्शा न जाय और उनको दण्डित करने के लिये उत्तर प्रदेश सरकार को जो कुछ करना हो वह हर संभव कदम उठाने चाहिए और दोषियों को सजा मिलनी ही चाहिये ।

मान्यवर, महाराज सिंह यादव की लोकप्रियता किसी से छिपी नहीं है । 1985 में जब वह इस सदन के सदस्य प्रथम बार निर्वाचित होकर आये तब से चाहे जैसा समय का प्रवाह रहा हो, वह हमेशा निर्वाचित होकर आते रहे, यह उनकी लोकप्रियता का प्रमाण है ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मान्यवर, विशम्भर सिंह जी की प्रधान से लेकर विधायक तक की यात्रा उनकी कर्म यात्रा, कर्तव्यपरायणता की यात्रा है। मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपने 4 दिवंगत साथियों के प्रति अपनी ओर से, अपने दल की ओर से इस आशा और विश्वास के साथ अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूं कि आप उनके परिवार तक हमारी शोक-संवेदना को पहुंचाने की कृपा करेंगे।

खादी एवं ग्रामीण उद्योग मंत्री (श्री राजाराम पाण्डेय)–

मान्यवर, आज इस सदन के 4 माननीय सदस्य हमारे बीच में नहीं हैं जिनके प्रति आपने शोक-संवेदना व्यक्त करने के लिये अवसर दिया है। मैं माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता बहुजन समाज पार्टी, नेता कांग्रेस, नेता लोकतांत्रिक कांग्रेस के द्वारा कहे गये शब्दों से अपने को संबद्ध करता हूं। श्री बनारसी दास चांदना जिनकी उम्र 72 वर्ष की थी और वह 3 बार इस सम्मानित सदन के सदस्य रह चुके हैं। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। वह बड़े उदार हृदय के थे। उनके चले जाने से अपूर्णनीय क्षति हुयी है। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति संवेदना प्रकट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उन्हें इस दुख को सहन करने की क्षमता दे। आपसे अनुरोध है कि इस शोक-संतप्त परिवार को मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से शोक-संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, दूसरे साथी स्वर्गीय निर्भय पाल शर्मा जी इस सदन के 3 बार सदस्य रहे हैं, वह आज हमारे बीच नहीं रहे। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे और आपसे अनुरोध है कि मेरी और मेरे दल की तरफ से शोक संवेदनाएं उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, तीसरे सदस्य महाराज सिंह यादव जी इस सदन के 5 बार सदस्य रहे हैं जिनके विषय में हमारे सभी नेताओं ने बताया। हम भी उनको व्यक्तिगत रूप से जानते थे। इस सदन में मुझे भी उनसे मिलने और बातचीत करने का मौका मिला था। ऐसे व्यक्ति बहुत कम दिखाई देते हैं। वह हम लोगों को अपने शिष्य के रूप में मार्ग-दर्शन देते थे। उन्होंने कभी पक्ष-विपक्ष की बात में ध्यान नहीं दिया। जो भी उनसे ज्ञान लेना चाहा तो उन्होंने अपने छोटे भाई की तरह स्नेह और मार्गदर्शन देने का काम किया। आज वह हम लोगों के बीच में नहीं हैं। उनके परिवार को जो ईश्वर ने जो दुख दिया है मैं प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उसे सहन करने की शक्ति प्रदान करे। मेरा आपसे अनुरोध है कि उनके शोक-संतप्त परिवार को मेरी तथा मेरे दल की तरफ से शोक संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

चौथे सदस्य श्री विशम्भर सिंह जो इस सदन के दो बार सदस्य रह चुके हैं; आज हमारे बीच में नहीं रहे। उनकी आयु मात्र 49 वर्ष की थी। उनके निधन से उनके परिवार को जो आघात पहुंचा है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इस दुख को सहन करने की क्षमता दे और आपसे अनुरोध है कि मेरी तथा मेरे दल की तरफ से शोक संवेदनायें उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

सार्वजनिक उद्यम एवं निर्यात प्रोत्साहन, अभाव सहायता एवं पुनर्वास मंत्री (श्री जय नारायन तिवारी)–

माननीय अध्यक्ष जी, आज इस विधान सभा में हमारे वर्तमान विधान सभा के 4 साथी हमारे बीच में नहीं रहे। उनके सम्बन्ध में माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष और माननीय नेता बहुजन समाज पार्टी ने और अन्य दलों के माननीय नेताओं ने जो अपनी भावनायें व्यक्त की हैं उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करते हुए इतना कहना चाहता हूं कि हम सभी का पूर्ण और सम्पूर्ण मानव जीवन का लक्ष्य यात्रा करना है लेकिन हमारी जो महायात्रा होती है वह बहुत दुःखदायी और कुछ सन्दर्भों में प्रेरणादायी होती है और इस महायात्रा की यात्रा अपने कर्मों और सत्कर्मों से ही तय करते हैं और किसी चीज का अवलम्बन नहीं मिलता है। हमारे 4 साथी जो इस वर्तमान विधान सभा के सदस्य

थे स्वनामधन्य श्री बनारसी दास चांदना, श्री निर्भयपाल शर्मा, श्री महाराज सिंह यादव और श्री विशम्भर सिंह जी । मान्यवर, निश्चित तौर पर हमारे चारो साथियों ने सत्कर्म किया था । इस प्रदेश की सबसे बड़ी पंचायत में बैठ करके अपने क्षेत्र और अपने जनपद की अहर्निश विकास का चिन्तन करते रहे थे । एक बार ही नहीं स्वर्गीय चांदना जी इस सम्मानित सदन के दो बार सदस्य रहे । और इन्होने अपने जीवन की यात्रा को प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक के रूप में शुरू किया था और इस यात्रा को शुरू करते हुए इस विधान सभा तक पहुंचे थे और हमारे स्वनामधन्य किसानों के नेता के रूप में माने जाने वाले स्व० चौधरी चरण सिंह जी के अनुयायी थे वह इनके प्रेरणा श्रोत थे । उनके इस सदन में अनुपस्थित की स्थिति में मैं और मेरा दल संवेदना व्यक्त करता है और आपसे निवेदन करता हूं कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी और हमारे दल की संवेदना प्रेषित करने की कृपा करें । दूसरे हमारे साथी निर्भयपाल शर्मा जी, जिनके साथ रहने का मुझे अवसर मिला था उनका प्रेरणादायी व्यक्तित्व आज भी याद है तथा उनकी याद कहीं न कहीं किसी न किसी कोने में विराजमान है तीन बार शर्मा जी ने इस सदन में आकर अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया उनके आकस्मिक निधन और जिस तरह से उनकी जघन्य हत्या की गई वह बहुत करुणा और विलाप का क्षण था उनके परिवार के प्रति हमारा दायित्व बनता है कि उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने की कृपा करें तथा यह व्यवस्था की जाए कि भविष्य में कभी किसी भी जनप्रतिनिधियों को इस सीमा से न गुजरना पड़े ।

तीसरे हमारे साथी महाराज सिंह यादव जी जिन्होंने पांच बार इस सम्मानित विधान सभा में आकर अपने क्षेत्र और जनपद का प्रतिनिधित्व किया । उन्होंने अपने जनपद की मण्डी समिति के अध्यक्ष से लेकर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया । लखनऊ विश्वविद्यालय में विधि संकाय के उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने प्रतिनिधित्व किया । निश्चित तौर पर यह उस समय एक बड़ी घटना थी । छात्रों के भविष्य छात्रों के मुस्तकबिल से उन्होंने अपने को जोड़ा । मैं तथा मेरा दल आपसे निवेदन करता है कि हमारी शोक सम्वेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक प्रेषित करें । चौथे हमारे साथी विशम्भर सिंह जो दो बार इस सदन के सदस्य रहे । उन्होने जम्हूरियत की पहली इकाई प्रजातंत्र की हमारी पहली इकाई ग्राम प्रधान के रूप में अपनी राजनीतिक यात्रा का श्रीगणेश किया और उस यात्रा को निरन्तर आगे बढ़ाते हुए प्रगति की एक-एक सीढ़ी तय करते हुए ब्लाक प्रमुख से लेकर विधान सभा के सदस्य के रूप में अपना रास्ता तय किया । इन सब चारो सदस्यों के असामयिक निधन से और इनको अपने बीच न पाते हुए मैं निवेदन करता हूं कि मेरी और हमारे दल की तरफ से शोक-संवेदनाएं उनके परिवार तक प्रेषित करने की कृपा करें ।

* मातृ एवं शिशु कल्याण परिवार कल्याण मंत्री (श्री सरदार सिंह)–

अध्यक्ष जी बनारसी दास चांदना, निर्भय पाल शर्मा, महाराज सिंह यादव, विशम्भर सिंह जी के निधन के सम्बन्ध में जो शोकोद्गार नेता सदन नेता प्रतिपक्ष एवं अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं मैं और मेरा दल उससे अपने को जोड़ता है । मान्यवर, जहां तक चांदना जी का सवाल है वे चौधरी जी की नीति से प्रेरित थे । मेरे उनसे बहुत अच्छे ताल्लुकात थे । आदरणीय निर्भय पाल शर्मा जी बहुत ही मृदुभाषी थे और सहारनपुर में बहुत ही लोकप्रिय थे । महाराज सिंह यादव जी जो लम्बे अरसे तक अपने क्षेत्र के प्रतिनिधि रहे हैं अपने इलाके में बहुत लोकप्रिय थे । वे अपनी समस्याओं को अर्थात जनता की समस्याओं को इस सदन के माध्यम से सरकार के समक्ष बहुत अच्छे ढंग से रखते थे । श्री विशम्भर सिंह जी से भी मेरे बहुत अच्छे ताल्लुकात थे, वे बहुत ही लोकप्रिय थे । प्रधान से लेकर इस सदन के सदस्य

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

रहे थे । चलते-चलते उनके प्राण पखेरू उड़ गये । माननीय मुख्य मंत्री जी के साथ उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होने का मुझे भी अवसर प्राप्त हुआ था वहां मैंने देखा कि लोग बहुत ही शोकाकुल थे । आज भी लोग उनकी सेवाओं से प्रभावित हैं । मेरा आपसे आग्रह है कि इन चारों के निधन के सम्बन्ध में मेरी और मेरे दल की संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें । भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे ।

*श्री कौकब हमीद–

मान्यवर, हमारा दिलो दिमाग यह मानने को तैयार नहीं होता कि जो साथी कल तक हमारे साथ इस सदन में बैठते थे आज हमारे बीच नहीं है । मगर यह सच्चाई है । जो पैदा होता है उसे ऊपर वाला बुला भी लेता है । मगर जब कुछ लोग पहले चले जाते हैं तो उनका अफसोस हमेशा रहता है । श्री बनारसी दास चंदना जी दो बार इस सदन के सदस्य रहे । वह एक बहुत ही गरीब परिवार में पैदा हुए मगर शायद कम लोग यह जानते होंगे कि वह अपने आखिरी दिन तक एक झोपड़ी में रहे । एक अजीब व्यक्तित्व था उनका । चौधरी चरण सिंह जी के सिद्धान्तों को मानने वाले और हमेशा गरीबों की चिन्ता करने वाले व्यक्ति थे । वह मेरे दल के सदस्य थे और उनकी कमी हमें एक बुजुर्ग के रूप में हमेशा रहेगी । श्री निर्भय पाल शर्मा जी मेरे व्यक्तिगत दोस्त थे । हम लोग एक ही स्कूल में पढ़े और साथ ही साथ इस सदन में भी आये । यहां लखनऊ में पड़ोस में रहते थे । उनकी अचानक जब हमें खबर मिली तो मैं बागपत में था । यकीन नहीं हुआ कि उनकी भी किसी से दुश्मनी हो सकती थी । मैं इस सरकार से आग्रह करूंगा कि उनके परिवार के लिए जो भी सिक्योरिटी हो सके की जाय और जो हत्यारे हैं उनको कानून के सामने लाना चाहिए नहीं तो एक दिक्कत हर व्यक्ति जो राजनीति में है उसके लिए हो जायगी जब निर्भय पाल जी के साथ हो सकता है तो किसी और के साथ क्यों नहीं । श्री महाराज सिंह यादव जी 5 बार इस सदन के सदस्य रहे हैं । जाहिर है उनकी लोकप्रियता कितनी मशहूर रही होगी । श्री विशम्भर सिंह जी के न रहने से सदन में ही नहीं बल्कि उनके क्षेत्र में भी कमी रह जायेगी । मान्यवर, मैं आपसे आग्रह करूंगा कि हमारे यह चारों साथी जो आज हमारे बीच में नहीं हैं, इनके परिवारों तक हमारी शोक संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें ।

*श्री रामजग–

माननीय अध्यक्ष जी, वर्तमान विधान सभा के हमारे चार साथी श्री बनारसी दास चांदना जी, श्री निर्भय पाल शर्मा जी, श्री महाराज सिंह यादव जी और श्री विशम्भर सिंह जी आज हमारे बीच में मौजूद नहीं हैं, इनका निधन हो गया है । इनके निधन से अपूर्णीय क्षति हुई है । इन चारों साथियों के निधन पर जो शोकोद्गार नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष नेता बसपा, नेता कांग्रेस, नेता लोकदल और अन्य दलों के नेताओं ने रखे हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । हमारे इन चार साथियों में से श्री निर्भय पाल शर्मा की हत्यारों ने निर्मम हत्या कर दी । पूरा प्रदेश इनकी हत्या से दुःखी रहा । हमारे इन चारों साथियों ने एक विधायक के रूप में एक समाज सेवी के रूप में अपने-अपने जिलों और क्षेत्रों में सराहनीय काम किये हैं । इनके निधन एक अपूर्णनीय क्षति हैं । हमारा दल और हम इससे दुःखी हैं और आपसे निवेदन करते हैं हमारे व हमारे दल की ओर से शोक-संवेदनाएं इनके शोकाकुल परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

*श्री सुबाष चन्द्र श्रीवास्तव–

मान्यवर, यह अत्यन्त पीड़ा और दुःख की घड़ी है जब यह सदन अपने चार वर्तमान साथियों के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त कर रहा है। मान्यवर, यह सृष्टि का अटल सिद्धान्त है कि जो इस जगत में आता है उसे एक न एक दिन जाना है और काल के क्रूर हाथों ने आज इस आदरणीय सदन के चार साथियों को हमसे छीन लिया। श्रीमन्, श्री बनारसी दास चांदना, श्री निर्भय पाल शर्मा, श्री महाराज सिंह यादव और श्री विशम्भर सिंह आज हमारे बीच नहीं रहे। श्री बनारसी दास चांदना जी इस सदन में सबसे पहले 1977 में जनता पार्टी के निशान से निर्वाचित होकर आये थे। सबसे पहले हापुड़ गाजियाबाद से निर्वाचित होकर आये। 1996 में मध्यावधि चुनाव में मेरठ से किसान कामगार पार्टी से निर्वाचित होकर आये थे। श्री चांदना जी आजीवन चौधरी चरण सिंह के विचारों से प्रभावित रहे। उनका जीवन और जीवन पद्धति चौधरी चरण सिंह के विचारों पर आधारित रहा। इनके निधन से न केवल जनपद मेरठ की राजनीति में शून्यता आई है बल्कि उत्तर प्रदेश को अपूर्णीय क्षति हुई है। हम अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शोक सम्वेदनाएं व्यक्त करते हैं और आपसे निवेदन करते हैं कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री निर्भय पाल शर्मा जी की निर्मम हत्या 6-11-2000 को हो गई। शर्मा जी सहारनपुर से निर्वाचित होकर आये थे 1985 और 1993 में कांग्रेस के टिकट से और 1996 के मध्यावधि चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के टिकट से सदस्य निर्वाचित हुए थे। इनकी निर्मम हत्या से हम सभी को बेहद आघात पहुंचा है। मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से अनुरोध करना चाहता हूं, गुजारिश करना चाहता हूं कि श्री शर्मा जी के हत्यारे जो विलुप्त हैं, उनके खिलाफ कठोरतम कार्यवाही हो और इतना ही नहीं बल्कि श्री शर्मा जी के परिवार की हिफाजत के लिए सरकार भरपूर इंतजाम करे। श्री शर्मा के निधन से सहारनपुर की ही नहीं बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश की क्षति हुई है। मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से शोक संवेदनाएं व्यक्त करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक-संवेदनाएं उनके परिवारजन तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री महाराज सिंह यादव भरथना इटावा से 1985, 1989, 1991, 1993 तथा 1996 में निर्वाचित होकर इस सदन में आए थे। वह पांचवीं बार समाजवादी पार्टी के निशान से निर्वाचित होकर इस वर्तमान सदन के सदस्य थे उन्होने जो अपने क्षेत्र की जनता की सेवा की उसके लिए वह सदा याद किए जाते रहेंगे। श्री यादव के निधन से न केवल इटावा बल्कि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश ने राजनीति में किसानों मजदूरो और समाज के गरीब तबके के लोगो की समस्याओं को उठाने वाले व्यक्ति को खो दिया है उनके निधन से हम सभी दुःखी हैं। उनके निधन से बहुत सदमा पहुंचा है। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शोक-संवेदनाएं व्यक्त करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक-संवेदनाएं उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री विशम्भर सिंह जी 1993 में और 1996 में जनता दल और भारतीय जनता पार्टी के निशान से निर्वाचित होकर आए थे। वह सादाबाद जनपद मथुरा से निर्वाचित होकर आए थे। विशम्भर सिंह जी की मृत्यु अल्पायु में हुई है उनकी आयु 49 वर्ष की थी जब इनकी मृत्यु हुई। वह दो बार इस सम्मानित सदन के सदस्य रहे वह अपने क्षेत्र के किसान मजदूर और समाज के गरीब तबके के लोगों के लिए, उनकी समस्याओं के समाधान के लिए इस सदन में चर्चा करते थे उनके निधन से हम सब बहुत दुःखी हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवारजन को इस बड़े दुख को सहने की क्षमता प्रदान

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

करें। मैं और मेरा दल उनके प्रति अपनी शोक संवेदनायें व्यक्त करता है और आपसे अनुरोध है कि हमारी शोक-संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

* वनमंत्री (श्री राजधारी)–

मान्यवर, हमारे सदन के सम्मानित सदस्य श्री बनारसी दास चांदना, श्री निर्भय पाल शर्मा, श्री महाराज सिंह यादव, श्री विशम्भर सिंह हमारे बीच नहीं हैं। मृत्यु जीवन की अनिवार्यता है लेकिन जो व्यक्ति समाज देश के लिएं कुछ करते हैं उनकी मृत्यु समाज को खटकती है आज उस श्रेणी में चारो सदस्य हैं जिन्होंने सामाजिक राजनीतिक जीवन में जिले से लेकर प्रदेश तक काफी योगदान दिया। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। उनके प्रति शोक संवेदनायें माननीय नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष एवं अन्य विभिन्न राजनीतिक नेताओं ने प्रकट की हैं मैं भी अपनी और अपने दल की शोक संवेदनायें उनसे सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

* श्री राजेन्द्र यादव–

श्रीमन्, श्री बनारसी दास चांदना, श्री निर्भय पाल शर्मा जी श्री महाराज सिंह यादव, श्री विशम्भर सिंह जी हमारे बीच नहीं हैं उनकी मृत्यु से मैं तथा मेरा दल दुखी है, उनके निधन के प्रति जो शोक संवेदनायें माननीय नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष, नेता कांग्रेस पार्टी, नेता बसपा एवं अन्य नेताओं ने व्यक्त की हैं मैं उनसे अपने तथा अपने दल की शोक संवेदनायें सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

* श्री पीतम राम–

मान्यवर, चार माननीय सदस्य हमारे बीच नहीं हैं श्री बनारसी दास चांदना, श्री निर्भय पाल शर्मा जी, श्री महाराज सिंह यादव, श्री विशम्भर सिंह जी के शोक-संतप्त परिवार के प्रति जो शोक संवेदनायें माननीय नेता सदन एवं अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने को एवं अपने दल को जोड़ता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि हमारी शोक-संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री अब्दुल सलाम–

माननीय अध्यक्ष जी, कुछ दिन पहले इस सदन में हम लोगों के साथ रहे हमारे चार सीनियर साथी, कुशल राजनीतिज्ञ खिलाड़ी हमारे बीच में नहीं रहे। श्री बनारसी दास चांदना, श्री निर्भय पाल शर्मा जी, श्री महाराज सिंह यादव व श्री विशम्भर सिंह इनका निधन हो गया है। हम भी नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष, नेता बसपा, नेता कांग्रेस (इ) तथा अन्य नेताओं ने जो विचार रखे हैं उससे अपने को सम्बद्ध करते हैं।

हमारी ओर से, हमारी पार्टी की ओर से उन सभी नेताओं को खिराजे अकीदत पेश करते हुए गुजारिश करता हूं कि हमारी तथा हमारे दल की शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की जहमत करें।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

* श्री देवेन्द्र प्रताप–

मान्यवर, श्री बनारसी दास चांदना, श्री महाराज सिंह यादव, श्री निर्भय पाल शर्मा एवं श्री विशम्भर सिंह इन माननीय सदस्यों के प्रति जो शोक सम्वेदनायें माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल एवं अन्य दलों के नेताओं ने प्रकट की हैं मैं और मेरा दल उससे अपने को सम्बद्ध करता है। माननीय श्री चांदना जी एक अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन यापन करने वाले समाजसेवी थे। वे जीवन भर स्व० चौधरी चरण सिंह जी की नीतियों के अनुयायी रहे। वे शिवालखास से लोक दल के विधायक थे। उनके निधन से अपूर्णनीय क्षति हुई है। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। श्री निर्भय पाल शर्मा की निर्मम हत्या हुई। वे सरसावां विधान सभा से तीन बार चुनकर आये। उनके निधन से अपूर्णनीय क्षति हुई है और जो उनके परिवार को दुःख पहुंचा है उस स्थिति को पूर्ण करने के लिए हमारे पास आज यही बचता है कि उनके प्रति शोक संवेदनाएं प्रकट करें। आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। श्री विशम्भर सिंह जी के निधन पर भी हम आपसे अनुरोध करते हैं कि उनके प्रति हमारी संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें। श्री महाराज सिंह यादव जी के प्रति भी हम आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

* श्री जगदीश सिंह राणा–

माननीय अध्यक्ष जी, बनारसी दास चांदना जी, श्री निर्भय पाल शर्मा जी, श्री महाराज सिंह यादव जी, श्री विशम्भर सिंह जी के निधन के शोक में अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शोक संवेदना व्यक्त करता हूं।

मान्यवर, जहां तक श्री निर्भय पाल शर्मा जी की हत्या का सवाल है, हत्या हुई और इस कदर हुई कि रात में एक ऐसे विधायक की हत्या हो गयी, जिसके बारे में सुनकर पूरे जनपद सहारनपुर की जनता स्तब्ध रह गयी। माननीय नेता सदन माननीय मुख्यमंत्री जी वहां पहुंचे और नेतागण भी पहुंचे और हजारों की संख्या में वहां पब्लिक इकट्ठा हो गयी।

इसी के साथ में बनारसी दास चांदना जी श्री निर्भय पाल शर्मा जी, श्री महाराज सिंह यादव जी, और श्री विशम्भर सिंह जी के निधन पर शोक व्यक्त करता हूं।

* श्री संजय गर्ग–

मान्यवर, यह चार हमारे साथी पिछले सदन में हमारे साथ थे। जिन्होंने इस पूरे प्रदेश की विभिन्न समस्याओं के समाधान में इसकी गहन चर्चा में भाग लिया। श्री बनारसी दास चांदना जी, श्री निर्भय पाल शर्मा जी, श्री महाराज सिंह यादव जी, श्री विशम्भर जी इन दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करने हेतु इस सदन में आज माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रति पक्ष और अन्य दलों के माननीय नेताओं ने जो विचार रखे, उनसे अपने का सम्बद्ध करते हुए आपसे विशेषतः यह अुनरोध करता हूं कि श्री निर्भय पाल शर्मा जी मेरे क्षेत्र के बराबर के क्षेत्र सरसावां से तीन बार 1985, 1993 में कांग्रेस से और 1996 में भारतीय जनता पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में यहां निर्वाचित होकर आये थे। वे मृदुभाषी थे, और उनके चेहरे पर सदैव मुस्कान छायी रहती थी और उन्होंने कर्मठ रूप से समाज की सेवा की। जिस व्यक्ति की कोई राजनीतिक वैमनस्यता जिले में न हो, जिनके घर के सामने ही कमिश्नर साहब का रेजीडेंस हो, दूसरी तरफ डी०आई०जी० साहब का रेजीडेंस हो, पीछे पुलिस लाईन हो, थोड़ी दूर पर

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

पुलिस चेक पोस्ट हो उनकी निर्मम हत्या इस तरह से कर दी जाय उससे पुरा का पुरा नगर, जनपद और जनपद के आस-पास के क्षेत्र में भय व्याप्त हो गया और पूरा समाज स्तब्ध रह गया । माननीय नेता सदन ने वहां पहुंचकर आश्वासन भी दिया कि एक माह में दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा आज पूरे जनपद के लोग इस बात पर विश्वास नहीं कर पा रहे हैं । लोग भय से आतंकित होकर उस सम्मानित जन प्रतिनिधि के प्रति इस तरह देख रहे हैं कि किस तरह उनको न्याय दिलाया जा सके निश्चित रूप से दोषियों के साथ किसी भी तरह का कोई भी नम्र व्यवहार न किया जाये और दूध का दूध और पानी का पानी निकालने की कार्यवाही की जाय और दोषियों को कानून के दायरे में सख्त से सख्त सजा दी जाये । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्माओं को वे शान्ति प्रदान करें और परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने का सार्मथ्य प्रदान करें । । ओम शान्ति ।

श्री अध्यक्ष–

विगत छः माह के अन्दर वर्तमान विधान सभा के चार माननीय सदस्यों का निधन हो गया । 72 वर्षीय श्री बनारसी दास चांदना जी का निधन 30 अक्टूबर, 2000 को हो गया । श्री चांदना जी दो बार इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे । आपातकाल में वे जेल में निरुद्ध भी रहे । उनकी सामाजिक और राजनीतिक के क्षेत्र में विशेष रुचि थी शिक्षा के क्षेत्र में भी वह काफी सक्रिय थे । अनेक शिक्षा संस्थाओं से वह सम्बद्ध थे ।

श्री निर्भय पाल शर्मा जी की 53 वर्ष की आयु में दिनांक 6 नवम्बर, 2000 को निधन हो गया उनकी निर्मम हत्या हम सबकी चिन्ता का विषय बन गयी थी । और उसके विरोध में जो सहारनपुर में व्यापक आक्रोश प्रदर्शित किया था वहां की जनता ने, वह एक उनकी लोकप्रियता का भी प्रमाण था और साथ ही साथ आग्रह करने का दूसरा स्वरूप था कि अपराधी को शीघ्र से शीघ्र दण्ड दिलाया जाये । निर्भय पाल शर्मा जी के साथ मेरा न केवल एक अध्यक्ष और विधायक के रूप में सम्बन्ध था, व्यक्तिगत सम्बन्ध भी था, एक अधिवक्ता और एक बादकारी के रूप में भी सम्बन्ध था ।

इसी तरह से श्री महाराज सिंह जी यादव का 55 वर्ष की आयु में 24 नवम्बर, 2000 को निधन हो गया । उन्होंने 5 बार निर्वाचित होकर इस सदन की सेवा की थी । राजनीति और समाजसेवा के क्षेत्र में वह अग्रणी थे ।

श्री विशम्भर सिंह जी का 49 वर्ष की अवस्था में 21 जनवरी, 2001 को निधन हो गया । वह दो बार इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए । ग्राम प्रधान और ब्लाक प्रमुख होने के पश्चात् उन्होंने इस सदन में एक स्थान भी बना लिया था ।

मैं इस सदन में माननीय मुख्यमंत्री, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय सभी दलों के नेताओं ने जो-जो शोक संवेदनाएं व्यक्त की 4 माननीय सदस्यों के बारे में, मैं अपने को उससे सम्बद्ध करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनके परिजनों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति दे । आपने जो शोक संवेदनायें व्यक्त की हैं उनको मैं दिवगंत सदस्यों के परिवारों को भेज दूंगा, प्रेषित कर दूंगा । आपसे अनुरोध करूंगा कि दो मिनट मौन खड़े होकर श्रद्धांजलि दें उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिए ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए ।)

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री शिवनरेश, श्री राम स्वरूप भारतीय, श्री जगदीश नारायण रस्तोगी, श्री मनहरन नाथ कौल, श्री महेश कुमार, श्री राम प्रसाद देशमुख, श्री रघुराज, श्री मुन्नूलाल, श्री भुवनारायण सिंह, श्री ओंकार सिंह, श्री शिवदास, श्री शिव प्रताप सिंह, श्री रूपनाथ सिंह यादव तथा डा० ब्रजभूषण मणि त्रिपाठी के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री राज नाथ सिंह–)

श्रीमन्, जो आया है उसे जाना है विधि का यह कठोर एवं अवश्यंभावी विधान है। मैं विधि के इस कठोर एवं अवश्यंभावी विधान के समक्ष नतमस्तक होते हुए विधान सभा के अपने 14 पूर्व सम्मानित सदस्यों को शोक संवेदना की अभिव्यक्ति करने के लिए इस सदन में खड़ा हुआ हूं। श्रीमन्, विधान सभा के 14 हमारे पूर्व सदस्य 15-8-2000 से लेकर 20-2-2001 के बीच दिवंगत हुए हैं। श्री शिव नरेश जी चित्रकूट से, श्री राम स्वरूप भारतीय प्रतापगढ़ से, श्री जगदीश शरण रस्तोगी मेरठ, श्री मनहरन नाथ कौल बहराइच, श्री महेश कुमार मुरादाबाद, श्री राम प्रसाद देशमुख बलरामपुर, श्री रघुराज महराजगंज, श्री मुन्नू लाल सीतापुर, श्री भुवनारायण सिंह गोरखपुर, श्री ओंकार सिंह मथुरा, श्री शिवदास मिर्जापुर, श्री शिव प्रताप सिंह बांदा, श्री रूपनाथ सिंह यादव इलाहाबाद, डा० ब्रज भूषण मणि त्रिपाठी, फैजाबाद से।

श्रीमन् श्री शिव नरेश सिंह जी का निधन 15 अगस्त, 2000 को हुआ। उनकी आयु कोई अधिक नहीं थी, वह 58 वर्ष के थे। 7 जुलाई, 1942 को पैदा हुये थे और वर्ष 1980 में कांग्रेस पार्टी के चुनाव चिह्न पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे, बांदा जनपद के कर्वी विधान सभा क्षेत्र से। वह जनहित से जुड़ी समस्याओं को लेकर कई बार आन्दोलन करते हुये जेल भी गये थे। श्री शिव नरेश जी का सम्बन्ध सहकारिता क्षेत्र के साथ भी था। वह सहकारिता आन्दोलन से जुड़े हुये नेता थे और अपने जनपद की जानी मानी हस्ती थे। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि स्वर्गीय श्री शिव नरेश जी की दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके शोक संतप्त परिवार को इस अपार कष्ट को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

श्रीमन् हमारे दूसरे पूर्व सदस्य विधान सभा स्वर्गीय श्री राम स्वरूप जी भारतीय का 17 नवम्बर, 2000 को प्रतापगढ़ में निधन हुआ है। वह चार बार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे, 1952, 1962, 1967 तथा 1974 में प्रतापगढ़ के कुण्डा विधान सभा क्षेत्र से। वह विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों से भी जुड़े हुये थे। विशेष रूप से हरिजन तथा पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिये वह सक्रिय रहते थे और बराबर उनकी समस्याओं के समाधान के प्रति भी वह सचेष्ट रहते थे। अध्ययन और खेलकूद में भी उनकी अभिरुचि थी। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके परिवार को इस अपार कष्ट को सहने की क्षमता प्रदान करें।

हमारे तीसरे पूर्व सदस्य, विधान सभा श्री जगदीश शरण जी रस्तोगी जिनका निधन 7 दिसम्बर, 2000 को हुआ, उनकी आयु 87 वर्ष की थी। श्री जगदीश शरण जी रस्तोगी 1962 में निर्वाचन क्षेत्र मेरठ नगर, जनपद मेरठ से कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे। श्री जगदीश शरण जी एक शिक्षक थे और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे। वर्ष 1951 में वह 10 माह तक जेल भी रहे। उनकी अवस्था 87 वर्ष की थी। श्रीमन् उनके निधन से एक बहुत बड़ा राजनेता, समाजसेवी को हमने खोया है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि श्री जगदीश शरण जी रस्तोगी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उनके शोक संतप्त परिवार को इस अपार कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्रीमन् श्री मनहरन नाथ कौल जी का निधन 7 दिसम्बर, 2000 को हुआ । श्री मनहरन नाथ जी जनपद बहराइच के रहने वाले थे और 1985 के सामान्य निर्वाचन में निर्वाचन क्षेत्र बहराइच से कांग्रेस के टिकट पर विजय प्राप्त करके विधान सभा के सदस्य बने थे । जहां पर उनके बारे में राजनीतिक क्षेत्र में काम करने के बारे में हम सबको जानकारी है, वहीं उनकी सामाजिक क्षेत्र में भी अभिरुचि रही है, इसके साथ-साथ वह लानटेनिस और क्रिकेट के भी एक अच्छे खिलाड़ी थे । विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी उनकी अभिरुचि रही है ।

मान्यवर, श्री मनहरन नाथ कौल जी आज हमारे बीच नहीं रहे । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति दे ।

मान्यवर, श्री महेश कुमार जी का 13 दिसम्बर, 2000 को हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया । वे 1967 में निर्वाचन क्षेत्र सम्भल, मुरादाबाद से जनसंघ के टिकट पर निर्वाचित हुये थे । जनसंघ में वह एक जुझारू नेता थे और विशेष रूप से व्यापारियों की समस्याओं के प्रति बहुत सक्रिय रहे, सजग रहे और संघर्षशील रहे । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को इस अपार कष्ट को झेलने की क्षमता प्रदान करे ।

मान्यवर, श्री राम प्रसाद देशमुख जी का निधन 21 दिसम्बर, 2000 को हो गया । उनकी अवस्था 81 वर्ष की थी । वे अलीगढ़ के निवासी थे । 6 बार उत्तर प्रदेश विधान सभा के वह सदस्य रहे और वह छठी लोकसभा के भी सदस्य रहे । श्री राम प्रसाद जी का विभिन्न संस्थाओं के साथ जुड़ाव था । वह कांग्रेस के एक जाने-माने कार्यकर्ता थे । वे चौधरी चरण सिंह के मंत्रि-मण्डल में दो बार तथा श्री त्रिभुवन नारायण सिंह जी के मंत्रि-मण्डल में एक बार उपमंत्री भी रह चुके हैं । मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और इस अपार दुख को झेलने की क्षमता उनके परिवार को दे ।

मान्यवर, श्री रघुराज जी का 27 दिसम्बर, 2000 को गोरखपुर में निधन हो गया । वह 77 वर्ष के थे । वह 1967 में निर्वाचन क्षेत्र लक्ष्मीपुर, गोरखपुर से विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे । बराबर गरीबों की समस्याओं को लेकर जूझते रहे, आजीवन उन्हीं की समस्याओं के लिये संघर्ष किया । आर्य समाज से भी उनका सम्बन्ध था । वे भारतीय जनसंघ के एक पुराने कार्यकर्ता थे । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को इस अपार कष्ट को झेलने की क्षमता प्रदान करें ।

मान्यवर, श्री मुन्नू लाल जी का निधन 4 जनवरी, 2001 को सीतापुर में हो गया, वह 87 वर्ष के थे । वर्ष 1952 में वह बिसवां विधान सभा क्षेत्र से विधायक हुये थे । वह जिला परिषद् के भी सदस्य रह चुके थे । समाज सेवा में उनकी विशेष रुचि थी । वे सीतापुर में अवैतनिक मजिस्ट्रेट के पद पर भी कार्य कर चुके थे । हमने एक समाजसेवी और कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया है । हमारी भगवान से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले और ईश्वर उनके परिवार को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति दे ।

मान्यवर, श्री ध्रुव नारायण सिंह का निधन 6 जनवरी, 2001 को हो गया । वह 84 वर्ष के थे । श्री ध्रुव नारायण सिंह जी 1974 में निर्वाचन क्षेत्र कौड़ीराम, गोरखपुर से निर्वाचित हुये थे । उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी जिसकी चर्चा होती रहती है । वह बहुत ही मिलनसार और मृदुभाषी थे जिसकी चर्चा

पूरे जनपद में होती थी । आज वह हमारे बीच नहीं रहे । हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को इस अपार कष्ट को सहने की शक्ति दें ।

श्री ओंकार सिंह जी का 10 जनवरी, 2001 को निधन हो गया । वह 70 वर्ष के थे, 1977 में वह उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य थे । राजनैतिक और सामाजिक जीवन उनका बहुत श्रेष्ठ रहा है । एक अच्छे और सामाजिक कार्यकर्ता थे । विधायक तो भले ही एक ही बार रहे हों लेकिन वह सामाजिक उत्थान के कार्यों में सदैव लगे रहे । भगवान से मेरी प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके परिवार को इस अपार कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करें ।

मान्यवर, श्री शिवदास जी का निधन 4 फरवरी, 2001 को हो गया । वह 72 वर्ष के थे । वे दो बार विधान सभा के सदस्य रहे । वे दो बार विधान सभा के सदस्य रहे । पहली बार 1969 में और फिर 1977 में । श्री शिवदास जी एक जाने-माने समाजवादी थे । केवल वह जनपद स्तरीय नेता नहीं थे बल्कि इस प्रदेश के एक जाने माने समाजवादी नेता थे । 77 में वह जनता पार्टी की सरकार में मंत्री भी थे । मिर्जापुर जनपद में एक मजदूर नेता के रूप में उनकी ख्याति थी । चाहे वह सीमेंट कारपोरेशन के कर्मचारियों का आन्दोलन हो अथवा रेनूकूट की विभिन्न कम्पनियों से जुड़े कर्मचारियों का आन्दोलन हो, सदैव उसका नेतृत्व किया । दुर्दैव से वह हमारे बीच में नहीं हैं । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दें और उनके शोक संतप्त परिवार को इस अपार कष्ट को झेलने की क्षमता प्रदान करें ।

मान्यवर, श्री शिव प्रताप सिंह जी का 8 फरवरी, 2001 को हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हुआ । उनकी आयु 65 वर्ष की थी । वह विगत कई महीनों से अस्वस्थ चल रहे थे । वह बांदा जनपद के तिंदवारी विधान सभा क्षेत्र से सर्वप्रथम 1980 में सदस्य विधान सभा निर्वाचित हुये । वह विधान परिषद् के सदस्य भी रहे । वह किसानों के नेता थे । कांग्रेस पार्टी के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता के रूप में उनकी मान्यता थी और प्रादेशिक स्तर के कार्यकर्ताओं में उनकी गणना होती थी । वह हमारे बीच में नहीं रहे । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके परिवार को इस अपार कष्ट को झेलने की शक्ति प्रदान करें ।

श्रीमन् रूपनाथ सिंह जी यादव, इलाहाबाद के निवासी थे । 83 वर्ष की आयु में 13 फरवरी, 2001 को उनका निधन हुआ । 1967 में इलाहाबाद जनपद के बहादुरपुर निर्वाचन क्षेत्र से वह 2 बार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये । 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया और जेल भी गये । श्री त्रिभुवन नारायण सिंह जी के मंत्रि-मण्डल में वह मंत्री भी रहे । उनके निधन से हमने एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी खो दिया है और एक अच्छा राजनीतिज्ञ खोया है । ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता के खोने से अपूर्णनीय क्षति हुई है । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि श्री रूपनाथ जी यादव की आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को इस अपार कष्ट को झेलने की शक्ति प्रदान करें ।

मान्यवर, डा० ब्रजभूषण मणि जी त्रिपाठी, जनपद फैजाबाद के निवासी थे । 20 फरवरी, 2001 को हृदयगति रूक जाने से उनका निधन हुआ । उनकी अवस्था कोई अधिक नहीं थी और केवल 56 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया । वह अस्वस्थ चल रहे थे और कई बार इस बीच में उनसे हम लोगों की भेंट हुई थी । वह ऐसे अस्वस्थ नहीं थे जिससे यह कहा जा सकता कि वह इतनी जल्दी हम लोगों के बीच से चले जायेंगे । लेकिन विधि की विडंबना को टाला नहीं जा सकता है और 56 वर्ष की आयु में

ब्रजभूषण मणि त्रिपाठी दिवंगत हो गये । वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के टिकट पर 1989 में मिल्कीपुर विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित हुये थे । मणि जी की विशेषता यह थी कि वह गन्ना किसानों की समस्याओं को लेकर हमेशा संघर्ष करते रहे । श्रीमन्, किसी की चाहे किसी दल के प्रति प्रतिबद्धता हो, चाहे किसी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता रही हो लेकिन मैं इतने विश्वास के साथ कह सकता हूं कि जितने भी हमारे पूर्व सदस्य जो दिवंगत हुये हैं उनकी समाजसेवा के प्रति प्रतिबद्धता पर प्रश्न चिह्न नहीं लगाया जा सकता है । अब तो केवल शोक संवेदना की औपचारिकता मात्र का निर्वाह हम सबको करना है । इस मन की गहराइयों के साथ मैं पूर्व सदस्यों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करता हूं और आपसे अनुरोध करूंगा कि मेरी ओर से, मेरे दल की ओर से और सदन की ओर से शोक संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक आप पहुंचाने की कृपा करें ।

* नेता विरोधी दल (श्री धनीराम वर्मा)–

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे इस सम्मानित सदन के 14 भूतपूर्व माननीय सदस्य अब हमसे हमेशा-हमेशा के लिये अलग हो गये हैं–श्री शिव नरेश, श्री राम स्वरूप भारतीय, श्री जगदीश शरण रस्तोगी, श्री मनहरन नाथ कौल, श्री महेश कुमार, श्री राम प्रसाद देशमुख, श्री रघुराज, श्री मुन्नू लाल, श्री ध्रुव नारायण सिंह, श्री ओंकार सिंह, श्री शिवदास, श्री शिव प्रसाद सिंह, श्री रूपनाथ सिंह यादव और डा० ब्रजभूषण मणि त्रिपाठी । श्रीमन्, ये सभी माननीय सदस्य कई बार सदन के सदस्य रहे और अपने विचारों से प्रदेश की जंनता की खुशहाली के लिये इस सदन में अपनी बात कहते रहे । उनमें से 3 सदस्य ऐसे भी हमसे जुदा हो गये जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया जिनमें श्री जगदीश शरण रस्तोगी, श्री रूपनाथ सिंह यादव, और राम प्रसाद देशमुख प्रमुख हैं । इन तीनों स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सदस्यों ने देश की आजादी के लिये त्याग और बलिदान किया और इनके त्याग और बलिदान के कारण ही आज हम सब लोग सदन में बैठे हुये हैं और यह देश आजाद है और हम स्वच्छन्द वातावरण में जी रहे हैं ।

श्रीमन् हर एक व्यक्ति की प्रतिभा अलग हुआ करती है । इनमें से भी कुछ शिक्षक थे, कुछ खेलकूद में रुचि रखते थे और कुछ सहकारिता में रुचि रखते थे । इन सभी दिवंगत सदस्यों की जो कार्य करने की शैली थी वह उसकी छाप छोड़कर चले गये । निश्चित तरीके से यह समाज और हमारा प्रदेश उनके गुणों को उनके आगे के जीवन में उपयोग करेगा और इतिहास के पन्नों में उनकी जो विशेषतायें हैं वह लिखी जायेंगी और हम सब उनका अनुसरण करेंगे । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इन सभी 14 भूतपूर्व माननीय सदस्यों की दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवारजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें । मान्यवर, मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी और मेरे दल की तरफ से और सम्पूर्ण सदन की तरफ से हमारी शोक संवेदनायें उनके परिवारजनों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

* श्री स्वामी प्रसाद मौर्य–

माननीय अध्यक्ष जी, आज काल के क्रूर हाथों ने एक नहीं हमारे 14 भूतपूर्व माननीय सदस्यों को उठा लिया है, काल कवलित किया है जिसमें श्री शिव नरेश–चित्रकूट, श्री राम स्वरूप भारतीय–प्रतापगढ़, श्री जगदीश शरण रस्तोगी–मेरठ, श्री मनहरन नाथ कौल–बहराइच, श्री महेश कुमार–मुरादाबाद, श्री राम प्रसाद देशमुख–अलीगढ़, श्री रघुराज–महराजगंज, श्री मुन्नूलाल–सीतापुर,

---

* वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

श्री ध्रुवनारायण सिंह–गोरखपुर, श्री ओंकार सिंह–मथुरा, श्री शिवदास–मिर्जापुर, श्री शिव प्रताप सिंह–बांदा, श्री रूपनाथ सिंह यादव–इलाहाबाद और डा० ब्रजभूषण मणि त्रिपाठी–फैजाबाद । ये सभी माननीय सदस्य इस सदन के सदस्य रह चुके हैं और इनमें से सभी भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व एवं प्रतिभाओं के धनी रहे हैं । इनमें से कुछ की शिक्षा के क्षेत्र में, कुछ की सामाजिक कार्य क्षेत्र में और कुछ लोग स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन से जुड़े रहे । और इन सभी सम्मानित सदस्यों के निधन से केवल संबंधित जनपद ही नहीं अपितु पूरे उत्तर प्रदेश को अपूर्णनीय क्षति हुई है । विशेष रूप से राम स्वरूप भारती जी जो प्रतापगढ़ के रहने वाले थे और वहां से जहां मैं स्वयं पैदा हुआ हूं उस विधान सभा क्षेत्र से यह एक बार नहीं बल्कि चार बार निरन्तर इस सदन के सदस्य रहे । गरीब और दलित परिवार में पैदा हुये प्रतिभा के धनी अच्छे वकील के रूप में भी प्रतिष्ठित रहे । समाज सेवा के साथ-साथ वह शिक्षण संस्थाओं से भी जुड़े रहे और मेरे ही गांव चकवड़ से मात्र 5 कि०मी० दूर राम स्वरूप भारती द्वारा स्थापित इण्टर कालेज आज भी उनकी स्मृति को ताजा कर रहा है । उस समय मैं प्राइमरी स्कूल का छात्र था जब वह मेरे यहां के विधायक होते रहे आते जाते तब उनको सुनने और देखने का मौका मिला मैं उनको देखने जाता था वह गांव में भी आते थे तो वह काफी सरल लगे तथा मृदुभाषी लगे । वह जिले की तमाम समाज सेवी संस्थाओं से जुड़े रहे तथा जिले के तमाम महत्वपूर्ण पदों पर रहे हैं । उनके निधन से प्रतापगढ़ ने एक बयोवृद्ध नेता खो दिया है लेकिन उनके योगदान को प्रतापगढ़ के लोग निरन्तर याद करते रहेंगे । इसी कड़ी में श्री रूपनाथ सिंह यादव जी का भी जिक्र करना चाहूंगा । विधान सभा में वह दो बार वर्ष 1967 और 1969 में चुनकर आये थे । 1977 में वह लोक सभा के भी सदस्य रहे प्रतापगढ़ जिस पार्लियामेंट क्षेत्र में मेरा घर पड़ता है वह वहीं से निर्वाचित हुये थे । यद्यपि उस समय मैं विद्यार्थी था लेकिन उनके साथ काम करने का मौका मिला था वह पिछड़े वर्ग के प्रख्यात नेता थे पिछड़े वर्ग तथा दलित आन्दोलन से वह निरन्तर जुड़े रहे और एक जमीनी कार्यकर्ता के रूप में गली कूचों के अन्दर जाकर दबे कुचले दलित शोषित लोगों के सम्मान और उनके स्वाभिमान के लिये निरन्तर कार्य करते रहे यद्यपि वह पेशे से अच्छे वकील भी रहे लेकिन सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है । जो अविस्मरणीय रहेगा । इसके साथ वह स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में कूदकर रण-बांकुरे के रूप में प्रसिद्ध हुये । जो आन्दोलन में शुरुवाती दौर से ही सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं । जिला परिषद के सदस्य भी रहे हैं साथ ही साथ श्री चौधरी चरण सिंह के मंत्रि-मण्डल में उपमंत्री और श्री त्रिभुवन नारायण सिंह जी के मंत्रि-मण्डल में भी कार्य किया । श्री यादव जी के निधन से हमने केवल इलाहाबाद का ही नहीं बल्कि प्रदेश का एक अच्छा समाज सेवी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया है जिसकी भरपाई कतई सम्भव नहीं है । हम स्वर्गीय श्री राम स्वरूप वर्मा जी के साथ-साथ सभी 14 सदस्यों को जो आज हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी स्मृतियां उनका योगदान हमारे बीच में आज भी है, हम अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उन्हें शोक संवेदनायें अर्पित करते हैं साथ ही साथ मान्यवर, आपसे निवेदन करते हैं कि हमारी इन भावनाओं को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

कृषि मंत्री (श्री दिवाकर विक्रम सिंह)–

मान्यवर, श्री शिव नरेश, श्री रामस्वरूप भारतीय, श्री जगदीश शरण रस्तोगी, श्री मनहरन नाथ कौल, श्री महेश कुमार, श्री राम प्रसाद देशमुख, श्री रघुराज, श्री मुन्नू लाल, श्री ध्रुव नारायण सिंह, श्री ओंकार सिंह, श्री शिवदास, श्री शिव प्रताप सिंह, श्री रूपनाथ सिंह यादव व डा० ब्रज भूषण मणि त्रिपाठी हमारे बीच नहीं हैं । इन दिवंगत आत्माओं के प्रति माननीय नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष व नेता बहुजन समाज पार्टी ने जो विचार व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने आपको जोड़ता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि आप हमारी व हमारे दल की ओर से यह शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

* श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, श्री शिव नरेश, श्री रामस्वरूप भारतीय, श्री जगदीश शरण रस्तोगी, श्री मनहरन नाथ कौल, श्री महेश कुमार, श्री राम प्रसाद देशमुख, श्री रघुराज, श्री मुन्नू लाल, श्री ध्रुव नारायण सिंह, श्री ओंकार सिंह, श्री शिवदास, श्री शिव प्रताप सिंह, श्री रूपनाथ सिंह यादव व डा० ब्रज भूषण मणि त्रिपाठी जी के निधन से जो रिक्तियां हुई हैं साधारण परिस्थितियों में उन्हें नहीं भरा जा सकता । वह सभी लोक प्रिय नेता थे । जब ये सदन में आते थे तो जनभावनाओं को अपनी वाक चतुरता से, कर्मठता व निष्ठा से इस सदन में रखते थे । श्री रामस्वरूप साधारण परिवार में जन्मे थे । वे गरीबी से निकलकर अपनी योग्यता से सदस्य बने पहली बार कुन्डा फिर बिहार क्षेत्र से निर्वाचित हुए । श्री कौल जाने-माने वकील थे । वह अपने हंसमुख स्वभाव के लिए जाने जाते थे । लगातार 6 बार वह निर्वाचित होकर इस सदन में आये । लोक सभा में और मंत्रिमण्डल में भी उन्होंने कार्य किया ।

श्री शिव प्रताप सिंह बांदा से निर्वाचित होने वाले सदस्य आज हमारे बीच नहीं हैं । उन्होंने अपना स्थान निर्वाचित होने के बाद विश्वनाथ प्रताप सिंह के लिये छोड़ दिया । वे विधान परिषद् में भी रहे और पंचायती राज वित्त निगम के अध्यक्ष के रूप में भी काम किया और बड़े लोकप्रिय नेता रहे ।

श्री रूप नाथ सिंह यादव का नाम आते ही एक ऐसी तस्वीर उभरकर आई जो स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे । उन्होंने एक प्रतिनिधि के रूप में, एक मंत्री के रूप में अपने कार्य को बखूबी अन्जाम दिया । अत्यन्त पिछड़े वर्ग के होने के बावजूद भी उन्होंने बड़ी लोकप्रियता हासिल की थी । उन्होंने प्रतापगढ़ से लोक सभा का प्रतिनिधित्व भी किया था । वे बड़े विनम्र, मिलनसार और कर्मठ सेवी थे । मैं अपने और अपने दल की ओर से शोक-संवेदनाएं व्यक्त करता हूं । जो शोकोद्गार यहां पर नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष और अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि इन सभी शोक-संतप्त परिवारों तक हमारी शोक संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें ।

खादी एवं ग्रामीण उद्योग मंत्री (श्री राजा राम पाण्डेय)–

मान्यवर, 14 भूतपूर्व माननीय सदस्यों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करने के लिये खड़ा हुआ हूं । मैं अपने को नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष, नेता बहुजन समाज पार्टी, नेता लोकतांत्रिक कांग्रेस, नेता भारतीय कांग्रेस ने जो शोकोद्गार व्यक्त किये हैं, से सम्बद्ध करता हूं । आज यह 14 भूतपूर्व सदस्य जो विधान सभा के रहे हैं, आज हमारे बीच नहीं हैं इनका निधन हो गया है । श्री शिवनरेश चित्रकूट से जिनका निधन 15-8-2000 को हो गया है, श्री राम स्वरूप भारतीय प्रतापगढ़ से जिनका निधन 7-11-2000 को हो गया है, श्री जगदीश शरण रस्तोगी मेरठ से जिनका निधन 6/7-12-2000 को हो गया है, श्री मनहरन नाथ कौल बहराइच से जिनका निधन 7-12-2000 को हो गया, श्री महेश कुमार मुरादाबाद से जिनका निधन 13-12-2000 को हो गया है श्री राम प्रसाद देशमुख अलीगढ़ से जिनका निधन 21-12-2000 को हो गया है, श्री रघुराज महराजगंज से जिनका निधन 27-12-2000 को हो गया है, श्री मुन्नू लाल सीतापुर से जिनका निधन 4-1-2001 को हो गया है, श्री ध्रुव नारायण सिंह गोरखपुर से जिनका निधन 6-1-2001 को हो गया है, श्री ओंकार सिंह मथुरा से जिनका निधन 10-1-2001 को हो गया है, श्री शिवदास मिर्जापुर से जिनका निधन 4-2-2001 को हो गया है, श्री शिव प्रताप सिंह बांदा से जिनका निधन 8-2-2001 को हो गया है, श्री रूप नाथ सिंह यादव इलाहाबाद से जिनका निधन 13-2-2001 को हो गया है, डा० ब्रज भूषण मणि त्रिपाठी फैजाबाद से जिनका निधन 20-2-2001 को हो गया है आज हम लोगों के बीच नहीं हैं । इन सबके निधन से पूरे प्रदेश को अपूर्णनीय क्षति हुई है ।

नोट :– * वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मान्यवर, इनके शोक संतप्त परिवारों को ईश्वर से प्रार्थना है कि इस अपार दुःख को वहन करने की शक्ति प्रदान करे। आपसे निवेदन है कि हमारी व हमारी पार्टी की और से उनके परिवारों को हमारी शोक संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें।

सार्वजनिक उद्यम एवं निर्यात प्रोत्साहन अभाव सहायता एवं पुनर्वास मंत्री (श्री जय नारायन तिवारी)–

मान्यवर, आज हम लोगों के बीच इस आदरणीय सदन के 14 भूतपूर्व सदस्य काल कवलित हो गये हैं और हम लोग उनको शोक संवेदना प्रस्तुत कर रहे हैं। इस क्रम में श्री शिव नरेश (चित्रकूट), श्री राम स्वरूप भारतीय (प्रतापगढ़), श्री जगदीश शरण रस्तोगी (मेरठ), श्री मनहरन नाथ कौल (बहराइच), श्री महेश कुमार (मुरादाबाद), श्री राम प्रसाद देशमुख (अलीगढ़), श्री रघुराज (महराजगंज), श्री मुन्नू लाल (सीतापुर), श्री ध्रुव नारायण सिंह (गोरखपुर), श्री ओंकार सिंह (मथुरा), श्री शिवदास (मिर्जापुर), श्री शिव प्रताप सिंह (बांदा), श्री रूपनाथ सिंह यादव (इलाहाबाद), डा० ब्रज भूषण मणि त्रिपाठी (फैजाबाद) के थे। मान्यवर, यह सारे के सारे आदरणीय सदन के पूर्व सदस्य रहे। इन्होंने विभिन्न काल और विभिन्न परिस्थितियों में अपने क्षेत्र और अपने जनपद की सेवा की है। यह सारे के सारे लोग हर परिस्थिति में सामाजिक समरसता का वातावरण और सृजन में अपने क्षेत्र अपने जनपद की शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से, अपने जनपद में सम्मानित पेशे वकालत के माध्यम से इस प्रदेश और क्षेत्र की सेवा करते रहे। डा० ब्रजभूषण त्रिपाठी कांग्रेस पार्टी के विधायक रहे, भारतीय जनता पार्टी के विधायक रहे। यह हमारे पड़ोस की विधान सभा क्षेत्र के माननीय सदस्य थे यह बहुत ही कर्तव्यपरायण थे और हर विपरीत परिस्थिति में अपना धैर्य रखते हुए, अनुशासन की परिधि रखते हुये चाहे यह किसी भी पार्टी में रहे इन्होंने जनता की सेवा की है जो कि अविस्मरणीय है। हम लोग संस्मरण के रूप में किसी न किसी रूप में उनकी याद अपने हृदय में संजोए हैं। शिव प्रसाद सिंह जी बांदा के विधायक रहे और विभिन्न पदों पर रहकर उन्होंने इस प्रदेश की जनता की सेवा की है और कठिन से कठिन परिस्थितियों में समझौता न करके उससे अपने को पार लगाने की कोशिश की है। उनकी याद हमारे मन में हमेशा रहेगी। इसी तरह से 14 माननीय सदस्य इस सदन के कभी न कभी सदस्य रहे हैं मैं उन सबके प्रति अपनी तथा अपने दल की शोक संवेदनायें व्यक्त करता हूं और आपसे गुजारिश करूंगा कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी तथा हमारे दल की भावनायें पेश करने की महती कृपा करें।

* मातृ एवं शिशु कल्याण मंत्री (श्री सरदार सिंह)–

माननीय अध्यक्ष जी, सम्मानित सदन के सदस्य श्री शिवनरेश चित्रकूट, श्री रामस्वरूप भारतीय प्रतापगढ़, श्री जगदीश शरण रस्तोगी मेरठ, श्री मनहरन नाथ कौल बहराइच, श्री महेश कुमार मुरादाबाद, श्री राम प्रसाद देशमुख अलीगढ़, श्री रघुराज महाराजगंज, श्री मुन्नू लाल सीतापुर, श्री ध्रुवनारायण सिंह गोरखपुर, श्री ओंकार सिंह मथुरा, श्री शिवदास मिर्जापुर, श्री शिवप्रताप सिंह बांदा, श्री रूप नाथ सिंह यादव इलाहाबाद, डा० ब्रजभूषण मणि त्रिपाठी फैजाबाद के प्रति जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष और अन्य दलों के नेताओं ने प्रकट किए हैं मैं और मेरा दल उससे अपने को जोड़ते हैं। यह सभी माननीय सदस्य अपने जिले में लोकप्रिय नेता थे। श्री ओंकार सिंह जी उसी विधान सभा से थे जिस विधान सभा से में हूं। यह हमारे जनपद में बहुत लोकप्रिय थे। यह कैंसर के मरीज हो गए थे यह इतने कर्मवीर थे कि बीमारी के बावजूद भी काम नहीं छोड़ते थे, यह अच्छे किसान थे। आलू पैदा करने में इनका अपना कीर्तिमान था। काम करते -करते इंजन की चोट में हाथ तोड़ लिया था माननीय मुख्य मंत्री जी ने भी इनकी मदद की थी लेकिन उन्हें काल से बचा नहीं पाए। संसार का नियम है कि जो आया है वह जायगा लेकिन सभी माननीय सदस्य अपने-अपने इलाकों में जनता पर

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

अपनी छाप छोड़कर गए हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले और आपसे प्रार्थना है कि मेरी तथा मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री कौकब हमीद–

मान्यवर, श्री शिवनरेश चित्रकूट, श्री राम स्वरूप भारतीय प्रतापगढ़ श्री जगदीश शरण रस्तोगी मेरठ, श्री मनहरन नाथ कौल बहराइच, श्री महेश कुमार मुरादाबाद, श्री राम प्रसाद देशमुख अलीगढ़, श्री रघुराज महाराजगंज, श्री मुन्नू लाल सीतापुर, श्री ध्रुवनारायण सिंह गोरखपुर, श्री ओंकार सिंह मथुरा, श्री शिवदास मिर्जापुर, श्री शिव प्रताप सिंह बांदा, श्री रूपनाथ सिंह यादव इलाहाबाद, डा० ब्रजभूषण मणि त्रिपाठी फैजाबाद यह 14 सदस्य जो इस सदन के किसी न किसी समय में सदस्य रहे हैं उनके निधन से उनके इलाके और जनपद में ही नहीं बल्कि पूरे समाज में एक रिक्तता आयी है। मैं चाहूंगा कि मेरी तथा मेरे दल की शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री राम जग –

मान्यवर, अध्यक्ष जी, इस सम्मानित सदन के 14 भूतपूर्व सदस्य आज हमारे बीच में नहीं हैं। इन 14 साथियों के निधन पर नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष, नेता बसपा तथा अन्य दलों के नेताओं ने जो अपने विचार व्यक्त किये हैं मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं। इन 14 सदस्यों के निधन से अपूर्णनीय क्षति हुई है और इनके जिले में नहीं बल्कि पूरे प्रदेश स्तर पर इनकी सेवायें हमारा प्रदेश याद करेगा। इनके निधन से मैं और मेरा दल बहुत दुःखी है। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी तथा हमारे दल की शोक संवेदनायें इनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

* श्री सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव–

माननीय अध्यक्ष जी, इस सम्मानित सदन के किसी न किसी समय के सदस्य रहे श्री शिवनरेश, श्री राम स्वरूप भारतीय, श्री जगदीश शरण रस्तोगी, श्री मनहरन नाथ कौल, श्री महेश कुमार, श्री राम प्रसाद देशमुख, श्री रघुराज, श्री मुन्नू लाल, श्री ध्रुवनारायण सिंह, श्री ओंकार सिंह, श्री शिव दास, श्री शिवप्रताप सिंह, श्री रूपनाथ सिंह यादव, डा० ब्रज भूषण मणि त्रिपाठी आज हमारे बीच में नहीं रहे। श्रीमन्, इस सम्मानित सदन के 14 भूतपूर्व सदस्य न केवल अपने क्षेत्रों बल्कि अपने सत्कर्मों, योग्यता, कर्मठता से इस प्रदेश की निरन्तर सेवा करते रहे। ये 14 भूतपूर्व सदस्यों के निधन से केवल उनके क्षेत्रों को ही बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश की राजनीति को क्षति पहुंची है। श्रीमन्, इन दिवंगत भूतपूर्व सदस्यों में श्री शिव नरेश जी सन् 80 में निर्वाचन क्षेत्र करबी, बांदा से निर्वाचित होकर आये थे। श्री राम स्वरूप भारतीय जी सन् 52 में कुण्डा से तथा 62. 67 व 74 में चार बार इस सम्मानित सदन के सदस्य रहे। श्रीमन् वह आजीवन दलितों के उत्थान के लिये संघर्ष करते रहे और आज उनके निधन से न केवल प्रतापगढ़ को क्षति पहुंची है बल्कि प्रदेश की राजनीति में एक शून्यता आयी है। श्रीमन्, इन 14 भूतपूर्व सदस्यों में से दो ऐसे वरिष्ठ और महान सदस्य हुए हैं कि जिसकी स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भागीदारी रही और जिन्होंने यहां सदन के भीतर भी अपने क्षेत्र की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण बहसों में उनकी यहां भागीदारी रही। श्री जगदीश शरण रस्तोगी जी स्वाधीनता संग्राम सेनानी थे 1962 में कांग्रेस पार्टी के निशान से चुनकर आये थे, उनके निधन से हमने एक महान स्वाधीनता संग्राम सेनानी खो दिया। श्री शिव दास जी जो 1969 और 1977 में निर्वाचित होकर आये थे वे समाजवादी आंदोलन के महान नेता थे। वे लोहिया जी और जय प्रकाश जी के विचारों से प्रभावित थे उनके निधन से न केवल मिर्जापुर बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश की राजनीति को गम्भीर क्षति पहुंची है।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्रीमन्, श्री रूपनाथ सिंह यादव जो स्वाधीनता संग्राम सेनानी थे जिन्होंने 1942 में भारत छोड़ों आन्दोलन में भाग लिया, सक्रिय भागीदारी की वे इस प्रदेश में चौधरी चरण सिंह जी के मंत्रि मंडल में श्री टी०एन० सिंह जी के मंत्रि-मंडल में दो बार मंत्री थे। श्रीमन्, आज इन महान भूतपूर्व सदस्यों के निधन से उत्तर प्रदेश को अपूर्णनीय क्षति हुई है और उनके निधन से मैं और मेरा दल बेहद दुःखी है। हम अपनी शोक संवेदना व्यक्त करते हैं और आपसे आग्रह करते हैं कि इन शोक संतप्त परिवारों के परिवारजनों तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

वन मंत्री (श्री राजधारी सिंह)–

श्रीमन्, इस सदन के भूतपूर्व सदस्य श्री शिव नरेश, श्री रामस्वरूप भारतीय श्री जगदीश शरण रस्तोगी, श्री मनहरन नाथ कौल , श्री महेश कुमार, श्री राम प्रसाद देशमुख, श्री रघुराज, श्री मुन्नू लाल, श्री ध्रुवनारायण सिंह, श्री ओंकार सिंह, श्री शिवदास, श्री शिव प्रताप सिंह, श्री रूपनाथ सिंह यादव, डा० ब्रज भूषण मणि त्रिपाठी के निधन से पूरे प्रदेश को अपूर्णनीय क्षति हुई है जैसा कि माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष और अन्य दलों के माननीय नेताओं ने जो अपने शोकोद्गार व्यक्त किये हैं मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से इन भूतपूर्व माननीय सदस्यों के निधन के प्रति संवेदनायें प्रकट करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी भावनायें उनके परिवार जन तक पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री राजेन्द्र यादव–

श्रीमन्, इस सदन के भूतपूर्व सदस्य श्री शिव नरेश श्री राम स्वरूप, श्री जगदीश शरण रस्तोगी, श्री मनहरन नाथ कौल, श्री महेश कुमार, श्री राम प्रसाद देशमुख, श्री रघुराज, श्री मुन्नू लाल, श्री ध्रुवनारायण सिंह, श्री ओंकार सिंह, श्री शिव दास, श्री शिव प्रताप सिंह, श्री रूप नाथ सिंह यादव, डा० ब्रज भूषण मणि त्रिपाठी जी आज हमारे बीच में नहीं है। मान्यवर, इनके निधन के प्रति जो शोक संवेदनायें माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष और अन्य दलों के माननीय नेताओं ने व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि मेरी और मेरे दल की ओर से व्यक्त की गयी संवेदनायें उनके परिवारजनों तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री अब्दुल सलाम–

माननीय अध्यक्ष जी, श्री शिव नरेश चित्रकूट, श्री राम स्वरूप भारतीय प्रतापगढ़, श्री जगदीश शरण रस्तोगी मेरठ, श्री मनहरन नाथ कौल बहराइच, श्री महेश कुमार मुरादाबाद, श्री राम प्रसाद देशमुख अलीगढ़, श्री रघुराज महराजगंज, श्री मुन्नू लाल सीतापुर, श्री ध्रुवनारायण सिंह गोरखपुर, श्री ओंकार सिंह मथुरा, श्री शिवदास मिर्जापुर, श्री शिव प्रताप सिंह बांदा, श्री रूप नाथ सिंह यादव इलाहाबाद और डा० ब्रज भूषण मणि त्रिपाठी ये 14 भूतपूर्व सदस्य जो सभी अपने क्षेत्र के इस सदन के लोकप्रिय थे, हमारे बीच में नहीं रहे। इस अपूर्णनीय क्षति के बारे में नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष, नेता बहुजन समाज पार्टी, नेता कांग्रेस, नेता लोकदल पार्टी, नेता भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, जनता दल और अन्य सभी पार्टी के नेताओं ने अपने विचार रखें है उन सभी के विचारों के साथ अपने विचार को सम्बद्ध करते हुए मान्यवर, मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से शोक संवेदना व्यक्त करते हुए आपसे गुजारिश करता हूं कि सभी सदस्य के परिवार को हमारी तरफ से, हमारी पार्टी की तरफ से शोक संवेदना पहुंचाने का कष्ट करें।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

वित्त मंत्री (श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव "हरीश जी")–

मान्यवर, स्वर्गीय रघुराज सिंह जी गोरखपुर जिले के ग्राम गगहा के निवासी थे। वह जीवन में बहुत ही अच्छे और मेधावी छात्र थे। एक सम्पन्न परिवार के होने के बाद भी उनका जीवन बहुत ही सादा था, वह बड़े मितव्ययी थे, वे इमानदारी के लिए प्रसिद्ध थे। इस नाते सामाजिक क्षेत्र में उनका स्थान बना। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा योगदान किया है। उनके द्वारा स्थापित कई विद्यालय आज भी अच्छी तरह से चल रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी मंच से हमारे साथ 10 वर्षों तक उन्होंने काम किया, बड़ा ही समर्पित बेदाग जीवन था। ऐसे लोगों के चले जाने से निश्चित रूप से एक महान क्षति होती है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके आत्मीयजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे। मैं चाहूंगा कि हमारी शोक संवेदना उनके आत्मीयजनों को पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री अध्यक्ष–

उत्तर प्रदेश की विधान सभा के 14 पूर्व माननीय सदस्यों का दिनांक 15 अगस्त, 2000 से 20 फरवरी, 2001 के बीच में निधन हो गया है। इन सभी माननीय सदस्यों ने विभिन्न काल खण्डों में, विभिन्न रूपों में इस सदन का ही नहीं बल्कि प्रदेश की सेवा की थी। इनमें से कई एक बार निर्वाचित हुए थे, कई अनेक बार निर्वाचित हुए थे, कुछ ने मंत्री पद, राज्य मंत्री पद और उप मंत्री पद सुशोभित किया था और कुछ ने लोक सभा की सेवा करने का भी अवसर निर्वाचित होकर प्राप्त किया था। इनके निधन से निश्चित रूप से न केवल इनके जनपदों में वरन् प्रदेश को भी एक अपूर्णनीय क्षति हुई है। माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष और अन्य दल के माननीय नेताओं ने जो शोकोद्गार व्यक्त किये हैं मैं उनके साथ अपने को सम्बद्ध करते हुए सभी दिवंगत सदस्यों के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। आपने जो शोक संवेदनाएं व्यक्त की हैं उनको दिवंगत सदस्यों के परिवार को प्रेषित कर दूंगा। मैं भी प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे, उनके परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति दे। आपसे अनुरोध करूंगा कि दो मिनट मौन धारण करके उनकी आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें और अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए।)

कृपया स्थान ग्रहण करें।

गुजरात में आये विनाशकारी भूकम्प से हुई जन-धन की आपार हानि के प्रति प्रस्तुत संवेदना प्रस्ताव

श्री अध्यक्ष–

एक प्रस्ताव मेरे समक्ष आया है, माननीय मुख्य मंत्री और माननीय नेता विरोधी दल ने संयुक्त हस्ताक्षर से दिया है।

मुख्य मंत्री (श्री राजनाथ सिंह)–

श्रीमन् मैं यह प्रस्ताव करता हूं कि "यह सदन दिनांक 26 जनवरी, 2001 को गुजरात में आये विनाशकारी भूकम्प से हुई जन-धन की अपार हानि के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।"

श्री अध्यक्ष–

चूंकि प्रस्ताव आया है, इसलिये मैं प्रश्न उपस्थित कर रहा हूं।

प्रश्न यह है कि यह सदन दिनांक 26 जनवरी, 2001 को गुजरात में आये विनाशकारी भूकम्प से हुई जन-धन की अपार हानि के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है ?

(प्रश्न उपस्थित किया गया और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ)

गुजरात में जो जन हानि हुई, उनके प्रति संवेदना प्रकट करने के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये हम लोग दो मिनट का मौन धारण करेंगे ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुये ।)

अब हम उठते हैं, 22 मार्च, 2001 को 11.00 बजे पुनः बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन 1 बजकर 20 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया ।)

लखनऊ :

दिनांक 21 मार्च, 2001

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय,

सचिव, विधान सभा,

उत्तर प्रदेश ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

पी० एस० यू० पी०-एल० 40 विधान सभा (61)–24-4-2001–813 (डी० टी० पी०) ।